संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

वर्ष-22 अंक- 284
पृष्ठ 8
शनिवार
04 जुलाई 2026
प्रातः संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

शहर समता

प्रयागराज से प्रकाशित Email : shaharsamta@gmail.com Website : https://Shaharsamta.com

सम्पादक-उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध- बरसात में बढ़ सकता है करोना..

विचार- मंदिर के चढ़ावे से विपक्षी सांसदों...

खेल- वैभव को कब मिलेगा मौका?

मुख्यमंत्री योगी ने कहा-

प्रदेश देश की सबसे पिछड़ी पाँच अर्थव्यवस्थाओं की श्रेणी से निकलकर शीर्ष तीन अर्थव्यवस्थाओं में शामिल

लखनऊ, संवाददाता। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को कहा कि पिछले नौ सालों में राज्य ने बीमारू राज्यों की श्रेणी से निकलकर भारत की शीर्ष तीन अर्थव्यवस्थाओं में से एक बनने का सफर तय किया है। उन्होंने इस बदलाव का श्रेय अच्छे शासन, टीम वर्क और टेक्नोलॉजी के प्रभावी इस्तेमाल को दिया। डॉ. राम मनोहर लोहिया उत्तर प्रदेश प्रशासन एवं प्रबंधन अकादमी के नए अत्याधुनिक परिसर के उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछले नौ वर्षों में राज्य की विकास यात्रा शासन और लोगों की सोच में आए बदलाव को दर्शाती है।

उन्होंने कहा कि पिछले नौ सालों में, उत्तर प्रदेश उस पहचान के संकट से बाहर निकल आया है जिसका सामना उसे कभी करना पड़ा था। आज राज्य ने खुद को उन राज्यों की श्रेणी में स्थापित कर लिया है, जहाँ न तो सरकार, न ही प्रशासनिक तंत्र और न ही जनता को पहचान के संकट का सामना करना पड़ता है। राज्य की आर्थिक प्रगति का जिक्र करते हुए ब्ड योगी ने कहा कि उत्तर प्रदेश देश की सबसे पिछड़ी पाँच अर्थव्यवस्थाओं की श्रेणी से निकलकर शीर्ष तीन अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हो गया है। इसने बीमारू राज्य के ठप्पे से मुक्ति पाई है, सुरक्षा और सुशासन के नए मानक स्थापित किए हैं, भीड़-भाड़ के प्रभावी प्रबंधन का उदाहरण पेश किया है और यह दिखाया है कि तकनीक किस तरह आम नागरिकों के जीवन को बदल सकती है। शहर और स्थानीय मार्गदर्शिका मुख्यमंत्री ने कहा कि शासन का स्वरूप न केवल राजनीतिक नेतृत्व से, बल्कि प्रशासनिक तंत्र के कामकाज से भी तय होता है। उन्होंने कहा कि किसी भी सरकार के बारे में जनता की राय प्रशासनिक तंत्र के कामकाज से बनती है। नौकरशाही सरकार और जनता के बीच एक पुल का काम करती है। जब यह पुल प्रभावी ढंग से काम करता है, तो सरकारी योजनाएं लाभार्थियों तक पहुंचती हैं और लोगों की सोच बदलती है। पब्लिक डिस्ट्रीब्यूशन सिस्टम में सुधारों का जिक्र करते हुए, ब्ड योगी ने कहा कि 2017 से पहले राशन वितरण को लेकर शिकायतें आम थीं, लेकिन e-PoS मशीनें आने के बाद इनमें काफी कमी आई। उन्होंने कहा कि हमने म-च्वै मशीनें लगाईं और शिकायतें बंद हो गईं। टेक्नोलॉजी ने आम आदमी की समस्या का समाधान किया। आज गरीबों को उनका राशन मिल रहा है और सिस्टम में होने वाली गड़बड़ियों पर रोक लगी है।

सिंधु जल संधि पर विदेश मंत्रालय का दो टूक

पाकिस्तान आतंकवाद को बढ़ावा देना बंद करे

नई दिल्ली,एजेंसी। भारत सरकार ने पाकिस्तान की ओर से लगातार उठाए जा रहे सिंधु जल संधि के मुद्दे पर करारा जवाब दिया है। विदेश मंत्रालय ने शुक्रवार को पड़ोसी देख को चेतावनी देते हुए कहा कि पाकिस्तान को सीमा-पार आतंकवाद को अपना समर्थन भरोसेमंद और पक्के तौर पर छोड़ना होगा। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा कि सिंधु जल संधि पर भारत का रुख पहले जैसा ही है। पाकिस्तान की ओर से लगातार सीमा पार आतंकवाद को समर्थन दिए जाने के कारण यह संधि फिलहाल स्थगित है। अगर पाकिस्तान चाहता है कि इस पर आगे बात हो, तो उसे सीमा पार आतंकवाद का समर्थन हमेशा के लिए पूरी तरह बंद करना होगा। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा, वेनेजुएला में ड्यूटी के दौरान जहाज पर जान गंवाने वाले भारतीय नाविक राकेश चौहान के शव के साथ कथित छेड़छाड़ और अंग निकाले जाने के मामले को भारत ने वेनेजुएला सरकार के सामने उठाया है। हमने वहां की सरकार से इस मामले की जल्द और निष्पक्ष जांच कराने का अनुरोध किया है। तीस्ता नदी परियोजना पर प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा, भारत की ओर से मदद दोनों देशों की आपसी सहमति से बने रोडमैप के आधार पर दी जाती है। इसकी नियमित समीक्षा भी की जाती है। तीस्ता नदी परियोजना पर भारत अपने विचार पहले ही बांग्लादेश को बता चुका है। इस मुद्दे पर आगे की अपनी नीति बनाने समय हम संभी संबंधित पहलुओं को ध यान में रखेंगे। ईरान के दिवंगत सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई के अंतिम संस्कार में भेजे गए भारतीय प्रतिनिधिमंडल पर रणधीर जायसवाल ने कहा, बिहार के राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) सैयद अता हसनैन और विदेश राज्य मंत्री पबित्र मार्गेरिटा आज तेहरान गए हैं। वे सर्वोच्च नेता के निधन के बाद आयोजित अंतिम संस्कार समारोह में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे। प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा कि अफगानिस्तान के मामले में, हमने पाकिस्तान से अफगानिस्तान पर हुए हवाई हमलों की कड़ी निंदा की थी, जिनमें महिलाओं और बच्चों समेत कई आम नागरिकों की जान चली गई थी।

बम-बम भोले के जयघोष के साथ शुरू हुई अमरनाथ यात्रा, बालटाल और नुनवान बेस कैंप से रवाना हुए श्रद्धालु

श्रीनगर,एजेंसी। दक्षिण कश्मीर हिमालय में समुद्र तल से लगभग 3,880 मीटर की ऊंचाई पर स्थित पवित्र अमरनाथ गुफा के लिए वार्षिक अमरनाथ यात्रा शुक्रवार से विधिवत शुरू हो गई। यात्रा के पहले दिन श्रद्धालुओं के जत्थे बालटाल और

नुनवान (पहलगाम) आध ार शिविरों से पवित्र गुफा की ओर रवाना हुए। अधि ाकारियों के अनुसार, रुक-रुककर हो रही बारिश के बावजूद यात्रा निर्धारित समय पर दोनों मार्गों से शुरू हुई। श्रद्धालु 48 किलोमीटर लंबे पारंपरिक नुनवान-पहलगाम मार्ग और 14 किलोमीटर लंबे बालटाल मार्ग से बाबा बर्फानी के दर्शन के लिए निकले। यात्रा में पुरुष, महिलाएं और साधु-संत बड़ी संख्या में शामिल हुए। सुबह होते ही दक्षिण कश्मीर के अनंतनाग जिले स्थित नुनवान आधार शिविर और मध्य कश्मीर के गांदरबल जिले के सोनमर्ग स्थित बालटाल आधार शिविर से श्रद्धालुओं को रवाना किया गया। संबंधित जिलों के उपायुक्तों और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षकों ने हरी झंडी दिखाकर यात्रा को आगे बढ़ाया। इस दौरान बम-बम भोले के जयघोष से पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया। इससे पहले गुरुवार को जम्मू के भगवती नगर आधार शिविर से उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने 4,809 से अधिक श्रद्धालुओं के पहले जत्थे को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया था। दोपहर में यह जत्था कश्मीर घाटी पहुंचा, जहां प्रशासन और स्थानीय लोगों ने श्रद्धालुओं का गर्मजोशी से स्वागत किया। श्रद्धालु अमरनाथ गुफा में प्राकृतिक रूप से निर्मित पवित्र हिम शिवलिंग के दर्शन और पूजा-अर्चना करेंगे। यात्रा को सुरक्षित और व्यवस्थित ढंग से संचालित करने के लिए व्यापक सुरक्षा व्यवस्था की गई है। पुलिस, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) तथा अन्य अर्धसैनिक बलों के हजारों जवान विभिन्न स्थानों पर तैनात किए गए हैं। इसके साथ ही पूरे यात्रा मार्ग पर हवाई निगरानी की भी व्यवस्था की गई है। 57 दिनों तक चलने वाली यह वार्षिक अमरनाथ यात्रा 28 अगस्त को संपन्न होगी।

शीर्ष अदालत ने प्राइवेट बिजली कंपनियों के कैग ऑडिट पर लगाई रोक

नई दिल्ली,एजेंसी। जस्टिस के.वी. विश्वनाथन और जस्टिस श्री चंद्रशेखर की बेंच ने यथास्थिति बनाए रखने का आदेश दिया। बेंच ने कहा कि बिजली रेगुलेटर दिल्ली इलेक्ट्रिसिटी रे गु ले टरी कमीशन (डीईआरसी) के कैग को नियुक्त करने के फैसले की कानूनी वैधता पर सवाल उठते हैं, जिन पर न्यायिक

निर्णय की जरूरत है। भाजपा के नेतृत्व वाली दिल्ली सरकार को झटका देते हुए शीर्ष अदालत ने आदेश दिया, अगले आदेश तक ऑडिट के लिए किसी चार्टर्ड अकाउंटेंट की नियुक्ति के संबंध में अपेलट ट्रिब्यूनल फॉर इलेक्ट्रिसिटी (एपटेल) के निर्देश पर रोक रहेगी। इस दौरान कैग भी ऑडिट की प्रक्रिया आगे नहीं बढ़ाएगा। शीर्ष अदालत एपटेल के अप्रैल के फैसले के खिलाफ डीईआरसी की याचिका पर सुनवाई कर रही थी। एपटेल ने अपने फैसले में कहा था कि ऑडिट का काम कैग को सौंपना कानूनी ढांचे के खिलाफ है।

सीएम रेखा गुप्ता का बड़ा फैसला

दिल्ली के भविष्य के लिए स्वच्छ हवा, स्वस्थ दिल्ली प्रोजेक्ट लॉंच

नई दिल्ली,एजेंसी। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने स्वच्छ हवा, स्वस्थ दिल्ली प्रोजेक्ट की शुरुआत की घोषणा की। यह सात साल का एक ऐसा प्रोजेक्ट है जिसका मकसद वायु प्रदूषण को कम करना है और इसे वर्ल्ड बैंक से आर्थिक मदद मिल रही है। इस प्रोजेक्ट का मकसद दिल्ली के वायु प्रदूषण को कम करने की योजना में तेजी लाना, नेशनल क्लीन एयर प्रोग्राम के लक्ष्यों को आगे बढ़ाना और विकसित भारत 2047 के विजन में योगदान देना है। सितंबर 2026 से अगस्त 2033 तक सभी जिलों में लागू होने वाले इस प्रोजेक्ट की अनुमानित लागत 8,300 करोड़ रुपये है। वर्ल्ड बैंक 65 प्रतिशत फंड देगा, जबकि दिल्ली सरकार बाकी 35 प्रतिशत का खर्च उठाएगी। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने बताया कि 10 जुलाई को होने वाली वर्कशॉप में तैयारियों को अंतिम रूप दिया जाएगा और सभी संबंधित पक्षों के बीच तालमेल बिठाया जाएगा। इस

वर्कशॉप में अलग-अलग सरकारी विभागों, मुख्य एजेंसियों और वर्ल्ड बैंक के वरिष्ठ प्रतिनिधि शामिल होंगे, ताकि सबकी भूमिकाएं स्पष्ट की जा सकें और प्रोजेक्ट को समय पर पूरा करने के लिए रोडमैप तैयार किया जा सके। इस पहल में प्रदूषण के मुख्य स्रोतों पर ध यान दिया जाएगा, जैसे कि ट्रांसपोर्ट से निकलने वाला ध ुआं, सड़क की धूल, निर्माण और तोड़-फोड़ से निकलने वाला कचरा, सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट, उद्योगों से निकलने वाला धुआं, हरियाली और जल प्रदूषण। मुख्यमंत्री ने इस प्रोजेक्ट को दिल्ली के भविष्य के लिए एक लंबे समय का निवेश बताया, जिसका मकसद साफ हवा, बेहतर पब्लिक हेल्थ और टिकाऊ शहरी माहौल देना है। गुप्ता ने इस प्रोजेक्ट के दो मुख्य पहलुओं पर जोर दियारू पहला, एक खास प्रोजेक्ट मैनेजमेंट यूनिट, एडवांस्ड मॉनिटरिंग सिस्टम, डेटा एनालिटिक्स, इंटीग्रेटेड कमांड एंड कंट्रोल सेंटर और विभागों के बीच बेहतर तालमेल के साथ-साथ लोगों में जागरूकता, ट्रेनिंग और इनोवेशन को बढ़ावा देकर हवा की क्वालिटी को बेहतर बनाना।

20 जुलाई से शुरू हो सकता है संसद का मॉनसून

नयी दिल्ली,एजेंसी। संसद का आगामी मॉनसून सत्र 20 जुलाई से शुरू होने की संभावना जताई जा रही है। सूत्रों के अनुसार यह सत्र करीब तीन सप्ताह तक चल सकता है, हालांकि इसकी आधिकारिक घोषणा अभी बाकी है। सामान्य तौर पर मॉनसून सत्र चार सप्ताह का होता है और इसमें लगभग 20 बैठकें आयोजित की जाती हैं, लेकिन इस बार बैठकों की संख्या कम रहने की संभावना व्यक्त की जा रही है। राजनीतिक दृष्टि से यह सत्र काफी महत्वपूर्ण माना जा रहा है क्योंकि कई राज्यों की बदलती राजनीतिक परिस्थितियों और विभिन्न दलों के भीतर जारी उठापटक का असर संसद में भी देखने को मिल सकता है। मॉनसून सत्र ऐसे समय में प्रस्तावित है जब कई राजनीतिक दलों में अंदरूनी बदलाव और सांसदों के पाला बदलने की चर्चाएं तेज हैं। राजनीतिक गलियारों में यह चर्चा है कि कुछ दलों के सांसदों ने नए राजनीतिक रुख अपनाए हैं, जिससे संसद के दोनों सदनों में शक्ति संतुलन प्रभावित हो सकता है। ऐसे में विपक्ष और सत्ता पक्ष के बीच कई मुद्दों पर तीखी बहस देखने को मिल सकती है।

कांग्रेस का दावा- चीनी कंपनियों सरकारी टेंडर में हिस्सा लेने की मिली अनुमति

नई दिल्ली,एजेंसी। कांग्रेस ने शुक्रवार को केंद्र सरकार पर निशाना साधा। पार्टी ने आरोप लगाया कि नरेंद्र मोदी सरकार का चीन के सामने टेकने का सिलसिला जारी है, जिससे देश के उद्योगों को बड़ा नुकसान हो रहा है, खासकर सूक्ष्म, लघु और मध यम उद्योग (एमएसएमई। पार्टी के महासचिव जयराम रमेश ने एक्स पर एक मीडिया रिपोर्ट साझा की। उस रिपोर्ट में दावा किया गया था कि भारत सरकार ने चीन की उन चार बिजली उपकरण बनाने वाली कंपनियों को अहम सरकारी ि ब ज ल ी परियोजनाओं के टेंडर में हिस्सा लेने की अनुमति दी है, जिनकी फैक्ट्रियां भारत में हैं। अपने

पोस्ट में जयराम रमेश ने कहा, मोदी सरकार का चीन के सामने सोच-समझकर जुकने का सिलसिला जारी है। इसी समय भारत का चीन के साथ व्यापार घाटा रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया है, जिससे देश के उद्योगों का बड़ा नुकसान हो रहा है, खासकर एमएसएमई। उन्होंने कहा कि अरुणाचल प्रदेश को लेकर चीन की उकसाने वाली गतिविधियां लगातार जारी हैं। रमेश ने दावा किया कि मेडोग (तिब्बत का दूरदराज क्षेत्र का जिला) में दुनिया की सबसे बड़ी जलविद्युत परियोजना का निर्माण जारी है। इससे ब्रह्मपुत्र नदी से जुड़ी भारत की जल सुरक्षा को खतरा हो सकता है। उन्होंने यह भी दावा किया कि पूर्वी लद्दाख के कई इलाकों में भारत ने अपनी पारंपरिक गश्त और पशु चराने के अधिकार छोड़ दिए हैं। उन्होंने कहा, 19 जून 2020 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सार्वजनिक रूप से चीन को क्लीन चिट दे दी थी। रमेश के अनुसार, यह उस समय हुआ, जब लद्दाख में भारत के 20 बहादुर जवानों का बलिदान हुआ था। रमेश ने यह भी कहा कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान की गतिविधियों में चीन की अहम भूमिका थी।

राम मंदिर दान घोटाला: उद्धव ने राम रक्षा आंदोलन का किया एलान

नई दिल्ली,एजेंसी। अयोध्या राम मंदिर में कथित दान गबन मामले को लेकर महाराष्ट्र की राजनीति गरमा गई है। शिवसेना (यूबीटी) प्रमुख उद्धव ठाकरे ने पांच जुलाई से श्राम रक्षाश आंदोलन शुरू करने का एलान किया है। वहीं, भाजपा ने उनके बयान पर तीखी प्रतिक्रिया देते हुए पलटवार किया है। उद्धव ठाकरे ने शुक्रवार को कहा कि पांच जुलाई (रविवार) को मुंबई के दादर स्थित हनुमान मंदिर में शिवसेना (यूबीटी) कार्यकर्ता और समर्थक एकत्र होंगे। वहां हनुमान स्तोत्र और हनुमान चालीसा का पाठ किया जाएगा और भाजपा से अयोध्या राम मंदिर में कथित दान गबन मामले की जिम्मेदारी लेने की मांग की जाएगी। उन्होंने कहा, राम मंदिर में कथित बड़े पैमाने पर हुई इस चोरी से जो भी लोग आहत हैं, वे हमारे साथ जुड़ें और भाजपा से जवाब मांगें। उद्धव ठाकरे ने आरोप लगाया कि केंद्र और कई राज्यों में भाजपा की सरकार होने के बावजूद देश में अव्यवस्था है और जनता के मुद्दों के प्रति उदासीनता दिखाई जा रही है।

उन्होंने कहा कि राम मंदिर आंदोलन में अविभाजित शिवसेना समेत कई हिंदुओं ने हिस्सा लिया था। इस दौरान कारसेवकों पर अत्याचार हुए, गोधरा ट्रेन कांड, अहमदाबाद दंगे और मुंबई सिलसिलेवार बम धमाके जैसी घटनाएं हुईं।

मंदिर चढ़ावा चोरी पर संघ ने जारी किया बयान, कहा-

चोरी की घटना से राम भक्तों की श्रद्धा को आघात पहुंचा

नई दिल्ली,एजेंसी। अयोध्या में रामलला मंदिर चढ़ावा चोरी होने की घटना पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) ने कड़ा बयान जारी किया। संघ ने कहा कि यह घटना केवल चोरी का मामला नहीं है, बल्कि इससे करोड़ों राम भक्तों की आस्था और श्रद्धा को गहरा आघात पहुंचा है। संघ ने दोषियों के खिलाफ कठोर कार्रवाई की मांग करते हुए मंदिर प्रबंधन और व्यवस्था में सुधार की आवश्यकता पर भी जोर दिया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले ने जारी बयान में कहा कि श्री राम जन्मभूमि पर बना भव्य मंदिर पीढ़ियों के संघर्ष, करोड़ों राम भक्तों के समर्पण, त्याग और बलिदान का प्रतीक है। यही कारण है कि यह मंदिर पूरे हिंदू समाज की आस्था, श्रद्धा और भक्ति का प्रमुख केंद्र है। ऐसे में अयोध्या स्थित श्री रामलला मंदिर के दान पात्रों में जमा धनराशि की चोरी की घटना बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। संघ ने कहा कि इस घटना से पूरे समाज और राम भक्तों की भावनाएं आहत हुई हैं। इसलिए इस मामले को सामान्य अपराध की तरह नहीं, बल्कि करोड़ों लोगों की आस्था से जुड़े गंभीर विषय के रूप में देखा जाना चाहिए। संघ ने अपने बयान में कहा कि श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास के आग्रह पर उत्तर प्रदेश सरकार ने इस मामले की जांच के लिए विशेष जांच दल (एसआईटी) का गठन किया है। जांच दल की सिफारिश के आधार पर कानूनी प्रक्रिया भी शुरू कर दी गई है। संघ ने स्पष्ट कहा कि जांच में जो भी व्यक्ति दोषी पाया जाए, उसके खिलाफ कठोर से कठोर कार्रवाई सुनिश्चित होनी चाहिए। साथ ही यह भी कहा गया कि न्याय तभी पूरा माना जाएगा, जब दोषियों को कानून के अनुसार सख्त दंड मिलेगा और भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति नहीं होगी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने कहा कि इस घटना को असाध ारण मानते हुए मंदिर प्रबंधन को व्यवस्था और संचालन की सभी कमियों को दूर करने के लिए प्रभावी कदम उठाने चाहिए। संघ के अनुसार वर्तमान में जो भ्रम और असमंजस की स्थिति बनी है, उसे जल्द समाप्त करना जरूरी है। इसके लिए मंदिर प्रबंधन और शासन द्वारा गठित विशेष जांच दल आवश्यक पहल करें। संघ ने विश्वास जताया कि बेहतर वित्तीय प्रबंधन, पूरी पारदर्शिता, मजबूत निगरानी व्यवस्था और धार्मिक पवित्रता के वातावरण के जरिए श्री रामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास करोड़ों श्रद्धालुओं का विश्वास और अधिक मजबूत करेगा।

टीईटी परीक्षा में 13 मुन्नाभाई पकड़े गए, आगरा में मोबाइल से नकल करते हुए एक परीक्षार्थी गिरफ्तार

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा (यूपीटीईटी) में शुक्रवार को प्रथम पाली में उत्तर प्रदेश में परीक्षार्थियों की उपस्थिति 92.4 फीसदी रही। इस दौरान दूसरे के स्थान पर परीक्षा देते हुए 13 मुन्नाभाई पकड़ लिए गए। उत्तर प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा (यूपीटीईटी) में शुक्रवार को प्रथम पाली में उत्तर

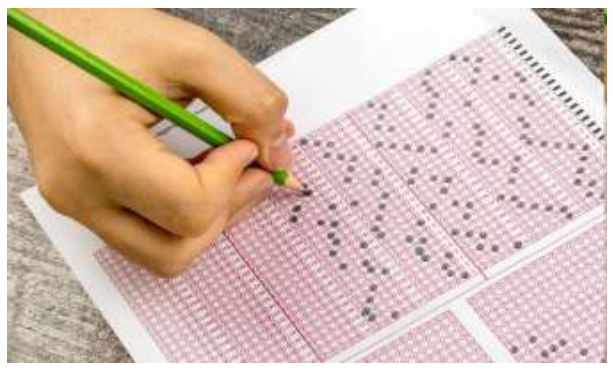

प्रदेश में परीक्षार्थियों की उपस्थिति 92.4 फीसदी रही। इस दौरान दूसरे के स्थान पर परीक्षा देते हुए 13 मुन्नाभाई पकड़ लिए गए। वहीं आगरा के एक केंद्र पर मोबाइल से नकल करते एक नकलची परीक्षार्थी को पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है।

उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा चयन आयोग (यूपीईएसएससी) के अनुसार प्रथम पाली में सिद्धार्थनगर, बस्ती, मथुरा, अमेठी, गाजियाबाद, लखनऊ, कानपुर नगर, गोंडा, बदायूं, अलीगढ़ और उन्नाव में दूसरे के स्थान पर परीक्षा दे रहे मुन्नाभाई पकड़े गए हैं। इसी तरह आगरा के एक परीक्षा केंद्र पर एक परीक्षार्थी मोबाइल से नकल करते हुए पकड़ लिया गया। सभी के खिलाफ नियानुसार कार्रवाई की जा रही है।

स्टॉक में लोहे के स्क्रू रखकर दो किलो चांदी के सिक्के लेकर रफूचक्कर हुआ कर्मचारी

प्रयागराज। कोतवाली एरिया के मीरगंज स्थित एक ज्वेलरी शोरूम से करीब दो किलोग्राम चांदी के सिक्के चोरी होने का मामला सामने आया है। आरोप है कि शोरूम का कर्मचारी स्टॉक में लोहे के स्क्रू रखकर सिक्कों को लेकर रफूचक्कर हो गया।

कोतवाली एरिया के मीरगंज स्थित एक ज्वेलरी शोरूम से करीब दो किलोग्राम चांदी के सिक्के चोरी होने का मामला सामने आया है। आरोप है कि शोरूम का कर्मचारी स्टॉक में लोहे के स्क्रू रखकर चांदी के सिक्कों को लेकर रफूचक्कर हो गया। कोतवाली

पुलिस ने वरुण गुप्ता के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर ली है।

मीरगंज स्थित डीआरएस जेम्स एंड ज्वेल्स प्राइवेट लिमिटेड के स्टोर में प्रकाश नाथ सेन बतौर प्रबंधक हैं। उन्होंने पुलिस को बताया कि कर्मचारी वरुण गुप्ता पिछले करीब तीन वर्ष से कंपनी में कार्यरत था। उसे चांदी के सिक्कों वाले सेक्शन का प्रभार सौंपा गया था। स्टॉक की सुरक्षा, तौल व हिसाब–किताब की जिम्मेदारी भी उसी के पास थी। 28 जून को स्टॉक का भौतिक सत्यापन किया गया तो क्लोजिंग स्टॉक में गड़बड़ी मिली। जांच में पता चला कि चांदी के सिक्कों की जगह वजन बराबर दिखाने के लिए लोहे के स्क्रू रख दिए गए थे। विस्तृत मिलान में करीब 2.040 किलोग्राम चांदी के सिक्के कम मिले। आरोप है कि पूछताछ के दौरान वरुण गुप्ता ने लगभग दो किलोग्राम चांदी के सिक्के निकालने की बात स्वीकार की और 29 जून को सामान वापस करने का आश्वासन दिया। हालांकि, अगले दिन वह दुकान नहीं पहुंचा और उसका मोबाइल फोन भी बंद मिला। वहीं, पुलिस कर्मचारी वरुण का रिकॉर्ड खंगालने में जुट गई है। पुलिस का दावा है कि आरोपी को जल्द ही दबोच लिया जाएगा।

खोजी कुत्ते के संकेतों के आधार पर किसी को नहीं ठहराया जा सकता दोषी

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि केवल स्निफर डॉग (खोजी कुत्ते) के संकेतों के आधार पर किसी व्यक्ति को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। डॉग ट्रैकिंग को साक्ष्य के रूप में पेश किया जाता है तो ट्रैकिंग पंचनामा और डॉग हैंडलर की गवाही जरूरी है। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि केवल स्निफर डॉग (खोजी कुत्ते) के संकेतों के आधार पर किसी व्यक्ति को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। डॉग ट्रैकिंग को साक्ष्य के रूप में पेश किया जाता है तो ट्रैकिंग पंचनामा और डॉग हैंडलर की गवाही

जरूरी है। इस टिप्पणी के साथ कोर्ट ने हत्या मामले में आजीवन कारावास की सजा रद्द करते हुए आरोपियों को बरी कर दिया। यह आदेश न्यायमूर्ति जेजे मुनीर व न्यायमूर्ति विनय कुमार द्विवेदी की खंडपीठ ने दिया है। मामला आगरा के थाना कागरौल क्षेत्र का है। 14 अक्तूबर 1998 की रात सुखपाल उर्फ मुन्ना घर से निकला था। अगले दिन उसका शव गांव के पास एक खेत में मिला। पुलिस स्निफर डॉग के साथ मौके पर पहुंची। उसके संकेतों के आधार पर पुलिस ने अपनी रिपोर्ट तैयार की। इसके बाद पुनर्विवेचना के बाद सीबीसीआईडी ने भंवर सिंह, बेनीराम, ओमप्रकाश और कप्तान सिंह के खिलाफ हत्या का आरोपपत्र दाखिल किया। ट्रायल कोर्ट ने वर्ष 2020 में इन चारों को दोषी मानते हुए आजीवन कारावास की सजा सुनाई। आरोपियों ने ट्रायल कोर्ट के फैसले को हाईकोर्ट में चुनौती दी। कोर्ट ने पक्षों को सुनने के बाद पाया कि अभियोजन का पूरा मामला विरोधाभासों से भरा हुआ है। एक ओर एफआईआर में तीन अलग लोगों को आरोपी बनाया गया। वहीं, सीबीसीआईडी की जांच में चार अन्य लोगों के खिलाफ आरोपपत्र दाखिल किया गया। अधिकांश गवाह प्रत्यक्षदर्शी नहीं थे। उनके बयान गांव में फैली अफवाहों पर आधारित थे। अदालत ने कहा कि अभियोजन स्पष्ट नहीं कर पाया कि वास्तविक आरोपी कौन है। साथ ही कोर्ट ने स्निफर डॉग से जुड़े साक्ष्यों को भी मानने से इन्कार कर दिया। कोर्ट ने सर्वोच्च न्यायालय के फैसले का हवाला देते हुए कहा कि स्निफर डॉग जांच एजेंसियों के लिए जांच में सहायक हो सकते हैं लेकिन उनकी गतिविधियों को किसी व्यक्ति की दोषसिद्धि का स्वतंत्र और निर्णायक आधार नहीं बनाया जा सकता।

भाकियू के प्रदेश अध्यक्ष अनुज सिंह पर आठ एफआईआर दर्ज, अवैध प्लाटिंग का आरोप

प्रयागराज। भारतीय किसान यूनियन (टिकैत गुट) के प्रदेश अध्यक्ष अनुज सिंह की मुश्किलें बढ़ गई हैं। प्रयागराज विकास प्राधिकरण (पीडीए) की शिकायत पर उनके खिलाफ एयरपोर्ट थाने में आठ अलग–अलग एफआईआर दर्ज किए गए हैं। भारतीय किसान यूनियन (टिकैत गुट) के प्रदेश अध्यक्ष अनुज सिंह की मुश्किलें बढ़ गई हैं। प्रयागराज विकास प्राधिकरण (पीडीए) की शिकायत पर उनके खिलाफ एयरपोर्ट थाने में आठ अलग–अलग एफआईआर दर्ज किए गए हैं।

सभी एफआईआर बिना नक्शा स्वीकृत कराए अवैध प्लाटिंग और निर्माण कराने के आरोप में दर्ज हुए हैं। पुलिस के अनुसार, पीडीए के अवर अभियंताओं और संबंधित क्षेत्रों के लेखपालों की ओर से दी गई अलग–अलग तहरीरों के आधार पर कार्रवाई की गई है।

आरोप है कि अनुज सिंह ने विभिन्न स्थानों पर प्राधिकरण से मानचित्र स्वीकृत कराए बिना प्लाटिंग और निर्माण कराया, जिससे विकास प्राधिकरण अधिनियम और अन्य संबंधित नियमों का उल्लंघन हुआ।

एयरपोर्ट थाने में दर्ज आठों एफआईआर की विवेचना शुरू कर दी गई है। पुलिस का कहना है कि जांच के दौरान उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर आगे की विधिक कार्रवाई की जाएगी। उधर, अनुज सिंह इन दिनों संगम क्षेत्र में किसानों की विभिन्न मांगों को लेकर जल सत्याग्रह आंदोलन पर बैठे हैं। ऐसे समय में उनके खिलाफ एक साथ आठ एफआईआर दर्ज होने से मामला राजनीतिक और प्रशासनिक हलकों में चर्चा का विषय बन गया है।

उधर, अनुज सिंह ने कहा कि उनके ऊपर लगाए गए सारे आरोप निराधार और बेबुनियाद हैं। उन्होंने कभी जमीन की प्लाटिंग की ही नहीं है। वह इस धंधे से उनका दूर–दूर तक वास्ता नहीं है। किसानों के आंदोलन को कुचलने के लिए प्रशासन के ईशारे पर उनके ऊपर केस दर्ज किए गए हैं। वह इससे डरने वाले नहीं हैं। उनका जल सत्याग्रह जारी रहेगा। किसानों की आवाज को वह उठाते रहेंगे। जब तक मांगे नहीं पूरी हो जाती तब तक वह आंदोलन जारी रखेंगे।

पूजा स्थल अधिनियम धार्मिक स्थल के स्वरूप बदलने पर रोक लगाता है, भूमि अधिग्रहण पर नहीं

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि पूजा स्थल अधिनियम, 1991 केवल धार्मिक स्थल के धार्मिक स्वरूप बदलने पर रोक लगाता है, भूमि अधिग्रहण पर नहीं। याची केवल किरायेदार और दुकानदार हैं, इसलिए उन्हें भूमि अधिग्रहण या मस्जिदों के संरक्षण से जुड़े अधिकारों के आधार पर राहत नहीं दी जा सकती।

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि पूजा स्थल अधिनियम, 1991 केवल धार्मिक स्थल के धार्मिक स्वरूप बदलने पर रोक लगाता है, भूमि अधिग्रहण पर नहीं। याची केवल किरायेदार और दुकानदार हैं, इसलिए उन्हें भूमि अधिग्रहण या मस्जिदों के संरक्षण से जुड़े अधिकारों के आधार पर राहत नहीं दी जा सकती।

इस टिप्पणी के साथ कोर्ट ने काशी विश्वनाथ धाम कॉरिडोर से जुड़े दालमंडी सड़क चौड़ीकरण में आने वाली मस्जिदों के संरक्षण के लिए दायर याचिका को खारिज कर दिया। यह आदेश न्यायमूर्ति जेजे मुनीर और न्यायमूर्ति अरुण कुमार की खंडपीठ ने दिया है। वाराणसी निवासी सैयद राशिद अली और अन्य ने याचिका दाखिल की थी।

इनका आरोप था कि दालमंडी सड़क चौड़ीकरण परियोजना के नाम पर उन्हें दुकानों से बेदखल किया जा रहा है। उन्होंने अदालत से अपनी दुकानों की सुरक्षा, पुलिस और प्रशासन की ओर से कथित उत्पीड़न पर रोक लगाने तथा क्षेत्र की छह प्राचीन मस्जिदों के अधिग्रहण और ध्वस्तीकरण से बचाने की मांग की। याचियों का कहना था कि ये मस्जिदें 15 अगस्त 1947 से पहले की हैं। इसलिए 1991 के पूजा स्थल कानून के तहत संरक्षित हैं।

राज्य सरकार की ओर से अपर महाधिवक्ता ने दलील दी कि सड़क चौड़ीकरण के लिए सहमति से जमीन खरीदी जा रही है। जहां सहमति नहीं है वहां नियमानुसार भूमि अधिग्रहण की कार्रवाई की जा रही है। यह भी कहा कि 1991 का कानून धार्मिक स्थलों के धार्मिक स्वरूप में परिवर्तन को रोकता है, सार्वजनिक उद्देश्य के लिए भूमि अधिग्रहण पर रोक नहीं लगाता।

कोर्ट ने पक्षों को सुनने के बाद कहा कि याची किरायेदार हैं। उन्हें नियमानुसार किए जा रहे भूमि अधिग्रहण पर आपत्ति उठाने का प्राथमिक अधिकार नहीं है। वहीं, कोर्ट ने छह मस्जिदों के संबंध में कहा कि वे वक्फ संपत्तियां हैं और उनके संरक्षण का प्राथमिक अधिकार संबंधित मुतवल्ली तथा वक्फ बोर्ड को है।

याची स्वयं इन मस्जिदों के प्रबंधन से जुड़े नहीं हैं। इसलिए इस मुद्दे पर उनकी याचिका स्वीकार नहीं की जा सकती। वहीं कोर्ट ने सर्वोच्च न्यायालय के डॉ. एम इस्माइल फारूकी बनाम भारत संघ (1994) सहित पूर्व के न्यायिक निर्णयों का भी उल्लेख किया और कहा कि मस्जिद सहित कोई भी धार्मिक स्थल राज्य की भूमि अधिग्रहण शक्ति से पूर्णतः मुक्त नहीं है।

इन मस्जिदों के संरक्षण की उठाई गई थी मांग

अंजुमन इंतजामिया मस्जिद, मस्जिद रंगीले शाह, मस्जिद अली रजा खान, मस्जिद करीमुल्लाह बेग, मस्जिद निसारान और मस्जिद संगमरमर।

ट्रेनों और बसों में उमड़ा परीक्षार्थियों का रेला, खिड़कियों के रास्ते कोच में घुसे अभ्यर्थी

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा (यूपीटीईटी) संपन्न होने के बाद प्रयागराज जंक्शन और विद्या वाहिनी बस स्टेशन पर परीक्षार्थियों का भारी हुजूम उमड़ पड़ा। घरों को लौटने की जल्दी में अभ्यर्थी जान जोखिम में डालकर ट्रेनों और बसों में सफर को मजबूर हुए। बसों और ट्रेनों में जगह न मिलने पर परीक्षार्थी खिड़कियों से भीतर घुसे। रेलवे स्टेशनों पर यात्रियों के दबाव से सुरक्षा चरमरा गई।

कानपुर इंटरसिटी एक्सप्रेस में भारी भीड़ से अफरा–तफरी मची। रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) ने भीड़ नियंत्रित कर परीक्षार्थियों को कतार में ट्रेनों में चढ़ाया। जनरल बोगियों में जगह न मिलने से बड़ी संख्या में परीक्षार्थी एसी कोचों में जबरन दाखिल हुए। सड़क परिवहन व्यवस्था भी इस भीड़ के आगे बौनी साबित हुई। विद्या वाहिनी बस स्टेशन पर देर शाम तक भीड़ रही।

टीईटी परीक्षा के बाद मेडिकल कॉलेज के पास बने रोडवेज बस स्टेशन पर भारी भीड़ उमड़ी। हर रूट की बसों में भीड़ देखी गई। परीक्षार्थी खिड़की के रास्ते बस में घुसे ताकि बैठने के लिए सीट मिल सके। टीईटी परीक्षा के बाद रेलवे स्टेशनों पर भारी भीड़ जुटी। हर रूट के ट्रेनों में परीक्षार्थी भरे रहे। खिड़की के रास्ते ट्रेन की बोगियों में छात्र घुस गए। बोगियों में पैर रखने की जगह नहीं रही।

टीईटी परीक्षा4 के बाद रामबाग और प्रयागराज जंक्शन पर छात्रों की अधिक भीड़ रही। इसके अलावा प्रयाग स्टेशन, प्रयागराज संगम और सूबेदारगंज में भी छात्र पहुंचे।

खिड़की के रास्ते घुसे

प्रयागराज जंक्शन पर सर्वाधिक भीड़ देखी गई। हर ट्रेन में परीक्षार्थी घुस गए। क्या जनरल और क्या एसी और स्लीपर। सभी बोगियों में छात्रों के घुसने के कारण काफी देर तक अफरातफरी मची रही।

तीन दोषियों की उम्रकैद बरकरार

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने हत्या में तीन दोषियों की उम्रकैद को बरकरार रखा। यह आदेश न्यायमूर्ति जेजे मुनीर और न्यायमूर्ति विनय कुमार द्विवेदी की खंडपीठ ने मुरादाबाद निवासी बलिस्टर, महेश और नरेश की ओर से दायर याचिका पर दिया।

प्रयागराज समेत सूबे के पांच प्रमुख जोन के जीएसटी संग्रह के राजस्व में आई गिरावट

प्रयागराज। गुड्स एंड सर्विसेज टैक्स (जीएसटी) कलेक्शन के जून माह की रिपोर्ट में जहां एक ओर देश भर में जीएसटी कलेक्शन 13.9 फीसदी बढ़ा है, वहीं प्रयागराज समेत सूबे के पांच बड़े औद्योगिक व व्यापारिक जोन राजस्व के मोर्चे पर पिछड़ गए हैं। गुड्स एंड सर्विसेज टैक्स (जीएसटी) कलेक्शन के जून माह की रिपोर्ट में जहां एक ओर देश भर में जीएसटी कलेक्शन 13.9 फीसदी बढ़ा है, वहीं प्रयागराज समेत सूबे के पांच बड़े औद्योगिक व व्यापारिक जोन राजस्व के मोर्चे पर पिछड़ गए हैं। प्रयागराज जोन का संग्रह पिछले साल की तुलना में 2.02 फीसदी घट गया। विभागीय आंकड़ों के मुताबिक, जून 2026 में प्रयागराज जोन का प्रदर्शन बेहद निराशाजनक रहा है। प्रयागराज जोन को इस महीने के लिए 587.78 करोड़ रुपये का राजस्व संग्रह करने का लक्ष्य दिया गया था, लेकिन इसके मुकाबले विभाग मात्र 292.82 करोड़ रुपये ही वसूल पाया।

यह कुल मासिक लक्ष्य का महज 49.82 प्रतिशत है। चिंता की बात यह है कि पिछले वित्तीय वर्ष 2025–2026 के जून महीने में प्रयागराज ने 298.86 करोड़ रुपये का संग्रह किया था, जिसकी तुलना में इस बार राजस्व में 2.02 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई है। इस गिरावट के कारण प्रयागराज जोन अपने वार्षिक लक्ष्य 7,065.05 करोड़ रुपये के सापेक्ष अब तक मात्र 15.66 प्रतिशत की ही प्राप्ति कर सका है। कर और वित्त सलाहकार प्रतीक मालवीय का मानना है कि प्रयागराज में निर्माण गतिविधियों में आई सुस्ती और स्थानीय स्तर पर बड़े व्यावसायिक लेन–देन में कमी के चलते यह गिरावट देखी जा रही है।

सहारनपुर और लखनऊ ने चौंकाया, गाजियाबाद सबसे नीचे

प्रदेश भर के प्रदर्शन पर नजर डालें तो सहारनपुर जोन 58.38 प्रतिशत की रिकॉर्ड मासिक वृद्धि के साथ नंबर वन पर रहा है। वहीं लखनऊ–2 ने भी 57.64 प्रतिशत की छलांग लगाकर दूसरा स्थान हासिल किया है। नोएडा भी 31.87 फीसदी की वृद्धि के साथ तीसरे स्थान पर मजबूती से बना हुआ है। इसके विपरीत, गाजियाबाद–1 जोन की स्थिति सबसे खराब रही, जहां पिछले साल की तुलना में राजस्व में 12.90 प्रतिशत की भारी गिरावट दर्ज की गई है। इसी तरह कानपुर–1 भी 2.94 प्रतिशत, गाजियाबाद–2 में 0.82 प्रतिशत और आगरा 0.15 प्रतिशत की गिरावट के साथ घाटे में रहे हैं।

जीएसटी कलेक्शन पर समीक्षा की जा रही है। सीमेंट से मिलने वाले कलेक्शन में थोड़ी कमी दिखी है। जुलाई माह में कलेक्शन बेहतर होने की उम्मीद है। – राम प्रवेश , एडिशनल कमिश्नर ग्रेड–वन

मानसून में अलनीनो का असर, सामान्य से 20 फीसदी कम होगी बारिश

प्रयागराज। देर रात बारिश के बाद शुक्रवार को पूरे दिन आसमान में बादल छाए रहे। शाम के समय तेज हवाएं चलीं, बिजली चमकी, मगर बारिश की चंद बूंदें ही पड़ीं। ऐसे में बारिश की आस लगाए बैठे लोगों का निराशा हुई।

देर रात बारिश के बाद शुक्रवार को पूरे दिन आसमान में बादल छाए रहे। शाम के समय तेज हवाएं चलीं, बिजली चमकी, मगर बारिश की चंद बूंदें ही पड़ीं। ऐसे में बारिश की आस लगाए बैठे लोगों का निराशा हुई। हालांकि इस बीच तापमान में बुधवार की अपेक्षा दो डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी देखने को मिली। मगर उमस का प्रभाव पिछले दिनों की अपेक्षा कम रहा। इससे लोगों ने थोड़ी राहत की सांस ली। मौसम विभाग ने आठ जुलाई तक बारिश के आसार जताए हैं। तीन व चार जुलाई को हल्की बूंदा–बांदी, जबकि पांच, छह, सात व आठ जुलाई को तेज बारिश का अनुमान है। ऐसे में अधिकतम तापमान चार से पांच डिग्री सेल्सियस तक नीचे जा सकता है। जिससे उमस से थोड़ी राहत मिलने के आसार हैं। मौसम विभाग के अनुसार अगर बारिश होती है तो आर्द्रता में आठ से 10 फीसदी तक गिरावट आ सकती है। मौसम विभाग ने जुलाई में सामान्य की अपेक्षा 20 फीसदी कम बारिश की आशंका जताई है। इसके पीछे अलनीनो का प्रभाव बताया जा रहा है। यह हर चार साल में देखने को मिलता है।

अलनीनो प्रशांत महासागर में समुद्र की सतह के तापमान में वृद्धि की घटना है। यह भारतीय मानसून को कमजोर करने के लिए जाना जाता है। कम बारिश के कारण भूजल स्तर में गिरावट आ सकती है। इससे पेयजल और सिंचाई के लिए पानी की उपलब्धता पर सीधा असर पड़ेगा। किसानों को अपनी फसलों के लिए वैकल्पिक सिंचाई के तरीकों पर विचार करना होगा। कम बारिश और गर्मी दोनों मिलकर धान और मक्के की उपज को भारी नुकसान पहुंचा सकते हैं। दालों और तिलहनों की बुवाई भी प्रभावित होगी। सोयाबीन और मूंगफली का रकबा काफी घट सकता है।

ग्रेच्युटी वसूली मामले में डीएम ने हाईकोर्ट से मांगी बिना शर्त माफी, नई रिकवरी प्रक्रिया होगी शुरू

प्रयागराज। ग्रेच्युटी की बकाया राशि की वसूली से जुड़े मामले में गौतमबुद्ध नगर की जिलाधिकारी मेघा रूपम ने इलाहाबाद हाईकोर्ट में व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर बिना शर्त माफी मांगी। ग्रेच्युटी की बकाया राशि की वसूली से जुड़े मामले में गौतमबुद्ध नगर की जिलाधिकारी मेघा रूपम ने इलाहाबाद हाईकोर्ट में व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर बिना शर्त माफी मांगी। न्यायमूर्ति सौरभ श्याम शमशेरी की एकल पीठ ने महेंद्र दत्त शर्मा की याचिका पर सुनवाई करते हुए नई रिकवरी प्रक्रिया शुरू करने के निर्देश दिए। इसके साथ ही सभी संबंधित याचिकाओं का निस्तारण कर दिया। आदेश का पालन न करने के मामले में हाईकोर्ट ने जिलाधिकारी को तलब किया था। सुनवाई के दौरान राज्य सरकार ने बताया कि ग्रेच्युटी अधिनियम के तहत याची के करीब सात लाख रुपये तथा उस पर देय ब्याज की वसूली के लिए 13 जून 2024 को तिलक एक्सपोर्ट्स के खिलाफ रिकवरी सर्टिफिकेट जारी किया गया था।

हालांकि, कंपनी के दिए गए पते पर कुछ नहीं मिलने से वसूली की कार्रवाई आगे नहीं बढ़ सकी। जांच में पता चला कि तिलक एक्सपोर्ट्स का अधिग्रहण उमा मेडिकेयर लिमिटेड ने कर लिया है लेकिन नई कंपनी के नाम से रिकवरी सर्टिफिकेट जारी न होने और उसे पक्षकार न बनाए जाने के कारण कार्रवाई बाधित रही। बाद में याचिकाकर्ता ने नई कंपनी को पक्षकार बनाने का आवेदन दिया। अदालत में राज्य सरकार और जिलाधिकारी ने भरोसा दिलाया कि नया रिकवरी सर्टिफिकेट जारी होने के बाद नियमानुसार प्रभावी वसूली सुनिश्चित की जाएगी।

नीट छात्र हत्याकांड में आरोपी शिवम तिवारी को हाईकोर्ट से जमानत

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने गोरखपुर के चर्चित नीट छात्र हत्याकांड के आरोपी शिवम तिवारी को सशर्त जमानत दे दी है। यह आदेश न्यायमूर्ति देवेंद्र सिंह प्रथम की अदालत ने दिया है। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने गोरखपुर के चर्चित नीट छात्र हत्याकांड के आरोपी शिवम तिवारी को सशर्त जमानत दे दी है।

संक्षिप्त

हर-हर महादेव के जयकारों के बीच, 60 शिवभक्तों का जत्था अमरनाथ यात्रा के लिए रवाना

लखनऊ (संवाददाता)। मोहनलालगंज से शुक्रवार सुबह 60 शिवभक्तों का जत्था अमरनाथ यात्रा के लिए रवाना हुआ। बाबा बर्फानी के पवित्र हिम शिवलिंग के दर्शन की कामना के साथ श्रद्धालुओं ने हर–हर महादेव और बम–बम भोले के जयकारे लगाए। यह जत्था अमरनाथ सेवा दल, मोहनलालगंज के प्रमुख सेवादार शिव प्रकाश गुप्ता बेटू के नेतृत्व में रवाना हुआ। इसमें राघवेंद्र दीक्षित, अमरीश श्रीवास्तव, विनीत मिश्रा, अक्षय मिश्रा, हर्ष चौरसिया, वंश वर्मा, ज्ञानेंद्र विक्रम सिंह, विशाल शर्मा, घनश्याम शर्मा समेत 60 श्रद्धालु शामिल हैं। यात्रा पर निकलने से पहले, सभी शिवभक्त कस्बे के श्री काशीश्वर मंदिर पहुंचे। यहां व्यापार मंडल अध्यक्ष और चेयरमैन प्रतिनिधि डॉ. अजय पाण्डेय सत्यम तथा अभिषेक शुक्ला के साथ विधि–विधान से पूजा–अर्चना की गई। इसके बाद प्रसाद वितरण किया गया। डॉ. अजय पाण्डेय ने प्रमुख सेवादार शिव प्रकाश गुप्ता को माला पहनाकर सम्मानित किया और सभी यात्रियों को अंग वस्त्र भेंट कर मंगलमय यात्रा की शुभकामनाएं दीं। अभिषेक शुक्ला ने भी यात्रियों को अंग वस्त्र भेंट किए और बाबा बर्फानी से सकुशल दर्शन की कामना की। मंदिर परिसर बम–बम भोले के जयकारों से गूंज उठा। पूजा–अर्चना संपन्न होने के बाद, डॉ. अजय पाण्डेय सत्यम ने नारियल फोड़कर और बस को हरी झंडी दिखाकर श्रद्धालुओं को कानपुर के लिए रवाना किया। कानपुर से ये सभी यात्री ट्रेन द्वारा जम्मू के लिए प्रस्थान करेंगे। इसके बाद वे पवित्र अमरनाथ गुफा की ओर अपनी यात्रा जारी रखेंगे।

सेंटर भूली युवती को महिला सिपाही ने स्कूटी से पहुंचाया

लखनऊ (संवाददाता)। राजधानी लखनऊ में उत्तर प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा (यूपी–टीईटी) 2026 के तीसरे दिन शुक्रवार को 46 परीक्षा केंद्रों पर परीक्षा हो रही है। इस दौरान एक महिला पुलिसकर्मी ने एक युवती की परीक्षा छूटने से बचा ली। दरअसल, युवती केकेवी की जगह गलती से केकेसी परीक्षा केंद्र पहुंच गई। यह बात युवती ने पुलिसकर्मियों को बताया तो उन्हीं में से एक महिला पुलिसकर्मी ने तुरंत उसे अपनी स्कूटी पर बैठाकर सही परीक्षा केंद्र पर पहुंचाया। इसके चलते युवती की परीक्षा छूटने से बच गई। पहली पाली का पेपर देने के बाद अभ्यर्थी बोले पेपर आसान था। बहुत टफ सवाल नहीं आए थे। लखनऊ में दूसरे दिन 19 हजार अभ्यर्थी परीक्षा दे रहे हैं। पहली पाली सुबह 9.30 बजे से आयोजित की गई। अभ्यर्थियों को थ्री लेयर जांच और बायोमेट्रिक सत्यापन के बाद ही परीक्षा कक्ष में प्रवेश दिया जा रहा है। गुरुवार को पहले दिन शहर में करीब 71% अभ्यर्थियों ने परीक्षा दी थी।

लखनऊ में धमाके के साथ रेस्टोरेंट में लगी आग

लखनऊ (संवाददाता)। खुर्रम नगर पेट्रोल पंप परिसर में संचालित पंजाबी फ्लेवर्ड फूड हब रेस्टोरेंट में शुक्रवार शाम को भीषण आग लग गई। आग की लपटें करीब 10 फीट ऊपर तक उठीं। इससे इलाके में अफरा–तफरी मच गई। आसपास मौजूद लोगों में दहशत फैल गई। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, आग एसी के कंप्रेसर में विस्फोट होने के बाद लगी। देखते ही देखते लपटों ने रेस्टोरेंट को अपनी चपेट में ले लिया। सूचना पर दमकल विभाग की दो गाड़ियां मौके पर पहुंचीं। एसडीआरएफ की टीम भी राहत एवं बचाव कार्य के लिए मौके पर पहुंची। दमकल कर्मियों ने कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पा लिया। घटना में किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है। हालांकि, आग से फूड हब में रखा सामान जलकर नुकसान होने की बात सामने आई है। आग लगने के कारणों की जांच की जा रही है। शुरुआती तौर पर एसी कंप्रेसर फटने को आग की वजह माना जा रहा है। रेस्टोरेंट पेट्रोल पंप परिसर में अवैध रूप से चल रहा था।

चढ़ावा चोरी पाप नहीं, महापाप : धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री

लखनऊ (संवाददाता)। अयोध्या पहुंचे धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री ने हनुमानगढ़ी के महंत राजू दास के गुरु के निधन पर शोक जताया। राम मंदिर चढ़ावा चोरी पर एसआईटी जांच, सरकार और कानून व्यवस्था पर भरोसा जताया। आगे पढ़ें पूरी खबर... बागेश्वर धाम पीठाधीश्वर धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री शुक्रवार को अयोध्या पहुंचे। एयरपोर्ट पर उनका संतों और श्रद्धालुओं ने स्वागत किया। यहां उन्होंने हनुमानगढ़ी के महंत राजू दास के गुरु के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया। राम मंदिर चढ़ावा चोरी पर धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री ने कहा कि यह केवल पाप नहीं, बल्कि महापाप है। जो भी इस कृत्य में दोषी होगा, उसे कानून के तहत सजा मिलेगी। भगवान भी उसे उसके कर्मों का दंड देंगे। एसआईटी जांच, देश की कानून व्यवस्था और सरकार पर पूरा भरोसा है। जांच निष्पक्ष होगी और सभी दोषियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी। धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री ने आरोप लगाया कि देश में संतों, महंतों, मठों और मंदिरों के खिलाफ सुनियोजित षड्यंत्र रचा जा रहा है। ऐसे प्रयासों का उद्देश्य लोगों की धार्मिक आस्था और श्रद्धा को कमजोर करना है। इसलिए, समाज को सतर्क रहने की आवश्यकता है। श्रद्धालुओं को किसी भी तरह के भ्रम या दुष्प्रचार में नहीं आना चाहिए। सत्य सामने आएगा। दोषियों को कानून के साथ–साथ ईश्वर का भी दंड मिलेगा।

राजधानी में बिजली विभाग की लापरवाही

लखनऊ (संवाददाता)। बिजली मीटर के गलत कनेक्शन के कारण एक परिवार को कई दिनों तक घर में करंट की समस्या झेलनी पड़ी। शिकायतों के बावजूद समय पर समाधान नहीं हुआ। बाद में तकनीकी जांच में तारों की गलत जोड़ाई सामने आई, जिसे ठीक किया गया। विभाग ने मामले की जांच और दोषियों पर कार्रवाई के निर्देश दिए। वृंदावन कॉलोनी के सेक्टर सी उपकेंद्र पर तैनात लाइनमैन और इंटेली स्मार्ट कंपनी के कर्मचारी की अराजकता के कारण एक परिवार को 15 दिनों तक करंट के घेरे में रात–दिन गुजारने पड़े। परिवार की बेटी पूनम ने बीते बृहस्पतिवार को अमर उजाला को व्यथा सुनाई तो देर रात उनके घर में उतरे करंट की समस्या का समाधान हुआ, तब चौन से सो सके। दरअसल, सीनियर सिटीजन राम शंकर की समस्या मुख्य अभियंता राम कुमार को बताई, तो उन्होंने मीटर बदलने का निर्देश दिया। कंपनी का कर्मचारी मीटर लेकर बदलने पहुंचा, लेकिन बदला नहीं।

सेना के आदर्श हैं ब्रिगेडियर मोहम्मद उस्मान साहब

(12/07/1912-03/07/1948)

अदम्य साहस, असीम शक्ति, अथक प्रयास, राष्ट्र प्रेम और देश सेवा के अद्वितीय दृष्टिकोण के साथ (15 जुलाई 1912) को तत्कालीन संयुक्त प्रांत आगरा व अवध तथा पूर्वांचल के जनपद मऊ में ग्रामसभा बीबीपुर के जनाब मोहम्मद फारूक खुनम्बीर उर्फ (खान बहादुर) व जमीलुन बीबी के घर जन्मे, नन्हे बालक ने केवल भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में अपने अतुलनीय और अविस्मरणीय कार्य तथा सर्वोच्च बलिदान देकर वस्तुतः एक अमित छाप छोड़ा है। पिता स्वयं एक पुलिस अधिकारी (कोतवाल)होते हुए अपने बच्चों को प्रशासनिक सेवा में भेजना चाहते थें, परंतु बचपन से ही अत्यंत साहसी व पराक्रमी बालक उस्मान ने देश सेवा करने को ठान लिया था। उस्मान ने में महज़ बारह वर्ष की अल्पायु में, अपने गांव के डूबते हुए एक बच्चे को कुएं में छलांग लगाकर उसकी जान बचाया था। उस्मान की प्रारंभिक व माध्यमिक शिक्षा गांव से ही पूर्ण हुई। युवावस्था में ही वह इंग्लैंड की प्रतिष्ठित '"रॉयल मिलट्री अकैडमी"' सेंडहॉर्स्ट में चुने गए, 1932 में वहां दाखिला लिया, (12 मार्च 1934) को एक वर्ष के लिए कैमरूनियन की पहली बटालियन में ब्रिटिश भारत में जुड़े, तत्पश्चात (19 मार्च 1935) को (23) की अवस्था में सर्वप्रथम सक्रिय रूप से ब्रिटिश भारतीय सेना सेवा में नियुक्त हुएं,और दसवीं बलोच रेजीमेंट (5/10) की पांचवी बटालियन में तैनात हुए। 1935 में ही "मोहम्मंद–अभियान" के दौरान उत्तर–पश्चिमी सीमांत पर सक्रिय सेवा दी,तथा नवंबर (1935) में ही उर्दू में प्रथम श्रेणी दुभाषिया के रूप में योग्यता प्राप्त की। उस्मान साहब का (30 अप्रैल 1936) को लेफ्टिनेंट तथा (31 अगस्त 1941) को कैप्टन के पद पर पदोन्नति किया गया। फरवरी से जुलाई 1942 तक क्वेंटो में भारतीय सेवा स्टाफ कॉलेज में भाग लिया तथा अप्रैल 1944 तक वे एक अस्थाई मेजर थें। (25 दिसंबर 1945) को सुप्रसिद्ध लंदन ग़जट में उनका एक अस्थाई मेजर के रूप में उल्लेख किया गया

और अप्रैल (1945 से 1946)तक दसवीं बलोच (14/10) की 14वीं बटालियन की उन्होंने कमान संभाली।

विभाजन दौरान जब पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान ने उन्हें सेना प्रमुख बनने का प्रस्ताव दिया तो उस्मान साहब ने '"वतन–ए–प्रेम"' का काबिल मिसाल पेश करते हुए उनके प्रस्ताव को ठुकरा कर आजीवन भारत में रहने का निर्णय लिया। सन् 1947 में उन्हें 50वीं पैराशूट ब्रिगेड की कमान सौंपी गई। मीरपुर और कोटली से आने वाली सड़कों के जंक्शन पर स्थित 'झांगड' रणनीतिक रूप से अति महत्वपूर्ण था। उन दिनों उस्मान साहब झांगड को पुनः प्राप्त करने की शपथ ठान लिए थे,और इसीलिए शपथ पूर्ण होने के तीन महीनों तक बिस्तर पर ना सोते हुए,नीचे केवल चटाई पर सोकर,अपने शपथ को पूर्ण किया। जनवरी–फरवरी 1948 में जम्मू कश्मीर के झांगड और नौशेरा पर हुए हमलों को विफल किया,जिसमें 2000 पाकिस्तानी सैनिकों (1000 मृत और 1000 घायल) को क्षति पहुंचाते हुए अपने मात्र (33 मृत और 102 घायल) भारतीय सैनिकों के साथ यह मुकाबला पूर्ण किया, उनके इसी अप्रतिम पराक्रमी कार्य के लिए उन्हें 'ष्नौशेरा का शेर"' नामक उपाधि मिली। पाकिस्तानी सेना में उस्मान साहब का खौफ इस कदर बढ़ा कि उनके ऊपर (50000) रूपए का इनाम घोषित किया गया। सन् 1948 में पाकिस्तान ने अपने नियमित सेना को पुनःविशेष कर झांगड प्राप्त करने हेतु तोपखाने से बमबारी व जोरदार हमला कराया,परंतु उस्मान साहब ने अकेले ही उनके प्रयासों पर पानी फेर दिया। झांगड के इसी झगड़े के दौरान '(3 जुलाई 1948)' को दुश्मन के 25 पाउंडर गोले से उस्मान साहब शहीद हो गए,और "वतन–ए–हिन्द" के लिए अपना प्राण बलिदान देकर मात्र (35 वर्ष 11माह और 18 दिन)के अपने गौरवपूर्ण, ऐतिहासिक व प्रेरणास्रोत जीवन के सफर को परिपूर्ण किया। उस्मान साहब को नई दिल्ली के जामिया मिलिया इस्लामिया परिसर के पास ओखला कब्रिस्तान में दफनाया गया। शुक्रगुजार हूं फिल्म निर्देशक रंजन कुमार सिंह और उपेंद्र सूद का जिन्होंने सन् 2020 में (नौशेरा का शेर) नामक चित्रण करते हुए,उनके कब्र के तत्कालीन दशा को यथास्थिति प्रदर्शित करते हुए, कब्र के विकृत पत्थर व क्षतिग्रस्त अवस्था से अवगत कराया, जिसके परिणाम स्वरुप भारतीय सेना द्वारा शहीद स्थल का जीर्णोद्धार कराकर मरम्मत किया गया। आज मैं,उनके (78) वें शहादत दिवस पर उनके जन्म स्थान व हम दोनों के गृह जनपद मऊ से इस लेख को लिखते हुए, अत्यंत सौभाग्यशाली व गर्वान्वित महसूस कर रहा हूं। अंततः उस्मान साहब एक महान व्यक्तित्व,कुशल नेतृत्व,सरल भ्रातृत्व,साहस और आत्मबल के श्रेष्ठ उदाहरण हैं। ब्रिगेडियर साहब अतीत वर्तमान और भविष्य तीनों के प्रेरणाश्रोत हैं।उनके अंतिम शब्द आने वाली हर पीढ़ियों में राष्ट्र प्रेम की अलख जगाएंगी,जो इस प्रकार हैरू..... मैं मर रहा हूँ, लेकिन जिस ज़मीन के लिए हम लड़ रहे हैं, उसे दुश्मन के हाथ में मत जाने देना।ष्उनकी बहादुरी और सर्वोच्च बलिदान के लिए ही, उन्हें मरणोपरांत श्महावीर चक्रश से भी सम्मानित किया गया था।

जय हिंद जय भारत।

उद्यमी बनकर विकास के पथ पर अग्रसर हों महिलाएं: डॉ. उमर अली शाह

काकीनाडा। श्री विश्व विज्ञान विद्या आध्यात्मिक पीठ के अलीशा पेपर प्लेट्स मेकिंग यूनिट का उद्घाटन पीठाधिपति रूप में भाग लिया। महिला समन्वयक पेरुरी कोमली ने

पीठाधिपति डॉ. उमर अली शाह ने कहा कि महिलाओं को उद्यमी बनकर विकास के पथ पथ अग्रसर होना चाहिए। श्री विश्व विज्ञान विद्या आध्यात्मिक पीठ, काकीनाडा आश्रम में, फरज़ाना डॉ. उमर अली शाह ने उमर अलीशा ग्रामीण विकास ट्रस्ट के तत्वावधान में शुक्रवार को किया। इस अवसर पर जेएनटीयूके के प्राचार्य डॉ के. पद्मराजू ने मुख्य अतिथि के कार्यक्रम की विशिष्टता को समझाया और कहा कि इस कार्यक्रम से महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण संभव है। पीठाधिपति डॉ. उमर अली शाह ने कहा कि यदि किसी घर में एक महिला का विकास होता है, तो परिवार के सभी सदस्य प्रगति हासिल करेंगे। उन्होंने कहा कि महिलाओं को अपने खाली समय का सदुपयोग कर आर्थिक सशक्तिकरण हासिल करना चाहिए। डॉ. उमर अलीशा ने कहा कि महिलाओं को अपने समय का सदुपयोग करते हुएमहिला एंटरप्रेन्योर के रोल मॉडल के तौर पर आगे बढ़ना चाहिए। डॉ. उमर अली शाह ने हर महिला से तीन पौधे लगाने, एल नीनो जैसी बारिश की कमी वाली स्थितियों से निपटने और पर्यावरण संरक्षण के लिए काम करने की अपील की। इस प्रोग्राम में मुख्य वर्किंग कमेटी के सदस्य श्रीमती मांडा येल्ला माम्बा, श्रीमती काकीनाडा लक्ष्मी, श्रीमती चिरला ललिता, श्रीमती थटला श्रीदेवी और आश्रम कमेटी के 9 सदस्य, पीठम सेंट्रल कमेटी के सदस्य श्री पेरूरी सुरीबाबू, श्री एवीवी सत्यनारायण तथा श्री चिरला वेंकट रेड्डी ने हिस्सा लिया।

मुख्यमंत्री ने जाना महंत नृत्य गोपाल दास का हाल, मेदांता पहुंचे योगी

लखनऊ (संवाददाता)। सीएम योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को मेदांता अस्पताल लखनऊ में भर्ती श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के अध्यक्ष महंत नृत्य गोपाल दास से भेंटकर हालचाल लिया।महंत को सांस लेने में तकलीफ और संक्रमण की शिकायत पर 29 जून को भर्ती कराया गया था, जिनको एक–दो दिन में छुट्टी मिल सकती है। महंत नृत्य गोपाल दास श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के अध्यक्ष हैं। उन्होंने भूमि पूजन, राम मंदिर निर्माण और प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में मौजूद रहकर प्रमुख योगदान दिया।मेदांता अस्पताल पहुंचकर मुख्यमंत्री ने श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के अध्यक्ष पूज्य महंत नृत्य गोपाल दास के स्वास्थ्य का हाल जाना और उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की। मुख्यमंत्री ने महंत

का इलाज कर रहे डॉक्टरों से भी उनकी हेल्थ का अपडेट लिया। डॉक्टरों ने बताया कि उनकी कंडीशन की लगातार निगरानी की जा रही है और इंफेक्शन कंट्रोल में है। उनका पांच दिन से आईसीयू में इलाज चल रहा है। गुरुवार को मेदांता ने मेडिकल बुलिटेन जारी कर उनका हेल्थ अपडेट शेयर किया।सांस लेने में तकलीफ और संक्रमण की शिकायत के बाद लखनऊ के मेदांता अस्पताल में भर्ती कराए गए श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के अध्यक्ष महंत नृत्य गोपाल दास के स्वास्थ्य में धीरे–धीरे सुधार हो रहा है और उन्हें अगले दो–तीन दिन में अस्पताल से छुट्टी मिलने की संभावना है। मेदांता अस्पताल की ओर से जारी स्वास्थ्य बुलेटिन में अस्पताल के चिकित्सा निदेशक डॉ. राकेश कपूर ने बताया कि वह और डॉ. दिलीप दुबे की टीम महंत नृत्य गोपाल दास की सेहत पर लगातार नजर रख रही है तथा उनकी तबीयत में सुधार हो रहा है।अस्पताल के निदेशक डॉ. राकेश कपूर ने बताया कि 89 वर्षीय महंत को 29 जून की दोपहर अचेत अवस्था में अस्पताल लाया गया था। जांच में उन्हें सांस लेने में तकलीफ और मूत्र मार्ग संक्रमण की पुष्टि हुई।

एक गुलाब

(कुण्डलिया)

केवल एक गुलाब ही, है ऐसा इक फूल।
दिल में करके गुदगुदी, उत्तर दे माकूल।
उत्तर दे माकूल, हमेशा ख़ामोशी से।
धड़कन से संवाद, करे वह बेबाकी से।
सुन लो कहें प्रदीप, समझ मत इसको बेकल।
करे प्यार की बात मौन धारण कर केवल।।

कारण कुछ भी हो मगर, बात यही है सत्य।
बढ़ती हैं दिल धड़कनें, सुन गुलाब का कथ्य।
सुन गुलाब का कथ्य, मुहब्बत चुपके–चुपके।
करती है संवाद, बेधड़क छुपके–छुपके।
सुन लो कहें प्रदीप, न इसका दिखे निवारण।
केवल एक गुलाब, प्रेम का बनता कारण।।

डॉ. प्रदीप चित्रांशी
लूकरगंज, प्रयागराज

5 जुलाई को भयहरणनाथ धाम में 17वाँ सामूहिक सामाजिक सत्याग्रह एवं किसान सम्मेलन

प्रतापगढ़। प्रसिद्ध पांडवकालीन बाबा भयहरणनाथ धाम की राजस्व अभिलेखों में दर्ज भूमि को कब्जामुक्त कराने एवं बकुलाही नदी पुनरोद्धार के अवशेष सरकारी कार्यो को पूर्ण कराने हेतु 17वाँ सामूहिक सामाजिक सत्याग्रह व विशाल किसान सम्मेलन 5 जुलाई रविवार को दोपहर 12 बजे धाम परिसर में आयोजित होगा। प्रबन्ध संस्था भयहरणनाथ धाम क्षेत्रीय विकास संस्थान के

आयोजन में भारतीय किसान यूनियन (अंबावता) व क्षेत्रीय समाज के नागरिक व संगठन सहभागी रहेंगे। संयोजक समाज शेखर ने बताया कि 5 जून से रुके सीमांकन कार्य को पुनः प्रारंभ कराने व नदी को सदानीरा करने हेतु सरकार व समाज से अपेक्षित सामाजिक निर्णय लिया जाएगा। किसान यूनियन के प्रदेश प्रवक्ता भानु प्रताप सिंह, जिलाध्यक्ष लक्ष्मी नारायण पांडेय व वरिष्ठ पदाधिकारी हई खान तथा मो जलालुद्दीन ने सभी किसान बंधुओं व भक्तगणों से सम्मेलन में पहुंचने की अपील की है। नवजीवन किसान संघ व पतंजलि योग पीठ की स्थानीय शाखा के प्रतिनिधियों ने सक्रिय सहयोग व सहभागिता करेंगे।

राजेंद्र चौधरी की तबियत खराब, सिविल अस्पताल में भर्ती

लखनऊ (संवाददाता)। समाजवादी पार्टी के मुख्य राष्ट्रीय प्रवक्ता और एमएलसी राजेंद्र चौधरी की अचानक तबीयत बिगड़ गई। उन्हें लखनऊ के सिविल अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां डॉक्टरों की टीम की निगरानी में इलाज चल रहा है। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव अस्पताल पहुंचे और उनके स्वास्थ्य का जायजा लिया। राजेंद्र चौधरी की तबीयत बिगड़ने की सूचना मिलते ही उन्हें लखनऊ के सिविल अस्पताल की इमरजेंसी में भर्ती कराया गया। बताया जा रहा है कि चौधरी को हार्ट अटैक आया, आईसीयू में भर्ती कराया गया है। अस्पताल प्रशासन और चार डॉक्टरों की टीम उनकी लगातार निगरानी कर रही है। अखिलेश यादव ने अस्पताल पहुंचकर डॉक्टरों से गहन जानकारी ली। उन्होंने सोशल मीडिया पर भी पोस्ट कर चौधरी के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की। अस्पताल के बाहर सपा कार्यकर्ता जुटने लगे, जो उनके प्रति स्नेह और चिंता का प्रतीक हैं। समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव कहते हैं कि राजेंद्र चौधरी अचानक बीमार पड़ गए। हम उन्हें तुरंत अस्पताल ले गए, और डॉक्टरों ने जरूरी शुरुआती इलाज शुरू कर दिया है। डिप्टी सिया ब्रजेश पाठक कहते हैं,एमएलसी राजेंद्र चौधरी की हालत अभी स्थिर है। हम सभी उनके जल्द ठीक होने की प्रार्थना करते हैं। अभी उन्हें यहां शुरुआती इलाज दिया जा रहा है।उन्हें कार्डियक अरेस्ट हुआ था, लेकिन अभी उनकी हालत स्थिर है। हम उनके जल्द ठीक होने की प्रार्थना करते हैं।

चलती डीसीएम में लगी आग

लखनऊ (संवाददाता)। सरोजनी नगर थाना क्षेत्र में शुक्रवार तड़के सीएनजी गैस सिलेंडरों से लदी एक चलती डीसीएम में आग लग गई। आग लगने के बाद चालक गाड़ी छोड़कर फरार हो गया। सूचना मिलने पर तीन दमकल गाड़ियों ने मौके पर पहुंचकर कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। इस घटना में कोई जनहानि नहीं हुई है। यह घटना शुक्रवार सुबह करीब 3.30 बजे दरोगा खेड़ा के पास कानपुर रोड से किसान पथ पर चढ़ते समय हुई। डीसीएम (एनएल 01 एजे 5567) मोहनलालगंज रोड की ओर जा रही थी। अचानक गाड़ी के इंजन से तेज धुआं और आग की लपटें उठने लगीं। आग देखकर चालक घबरा गया और गाड़ी को किनारे खड़ी कर मौके से भाग निकला। राहगीरों ने तत्काल फायर कंट्रोल रूम को घटना की सूचना दी। सूचना मिलते ही सरोजनी नगर फायर स्टेशन से एफएसओ धर्मपाल सिंह के नेतृत्व में दो दमकल गाड़ियां मौके पर पहुंचीं। इसके अतिरिक्त, आलमबाग फायर स्टेशन से भी एक दमकल गाड़ी बुलाई गई। तीनों दमकल गाड़ियों ने मिलकर कुछ ही देर में आग पर पूरी तरह नियंत्रण पा लिया। फायर कर्मियों के अनुसार, यदि समय रहते आग पर काबू नहीं पाया जाता तो सीएनजी गैस सिलेंडरों में भी आग लग सकती थी, जिससे एक बड़ी दुर्घटना हो सकती थी। फिलहाल, आग लगने के कारणों का अभी तक पता नहीं चल पाया है और मामले की जांच की जा रही है।

युवती ने की आत्महत्या

लखनऊ (संवाददाता)। राजधानी के पारा थाना क्षेत्र के दोदाखेड़ा में गुरुवार रात एक 30 वर्षीय युवती ने अपने घर के कमरे में फंदे से लटककर आत्महत्या कर ली। घटना की जानकारी शुक्रवार सुबह होने पर परिजनों ने पुलिस को सूचित किया। सूचना मिलने पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और मामले की जांच शुरू कर दी है।

सम्पादकीय.....

सिलैक्टिव आक्रोश से कांग्रेस का इतिहास नहीं मिट सकता

गाजा पर सोनिया गांधी का लेख नैतिकता का पाठ नहीं, बल्कि चयनात्मक आक्रोश का एक जीवंत उदाहरण है। भारत को मानवाधिकारों का उपदेश देने से पहले कांग्रेस नेतृत्व को स्वतंत्र भारत के सबसे काले अध्यायों में से एक, 1984 के सिख विरोधी नरसंहार और उसके बाद पंजाब में वर्षों तक चले दर्द और पीड़ा का जवाब देना चाहिए। नवम्बर 1984 में हजारों निर्दोष सिखों की निर्मम हत्या कर दी गई। लोगों को उनके घरों से घसीटकर बाहर निकाला गया, लोहे के सरियों से पीटा गया, उन पर मिट्टी का तेल डालकर जिंदा जला दिया गया। पूरे के पूरे परिवार समाप्त कर दिए गए। गुरुद्वारों का अपमान किया गया, घरों और दुकानों को लूटकर आग के हवाले कर दिया गया। बच्चों ने अपने पिता को भीड़ द्वारा मारते हुए देखा, माताओं ने अपने बेटों को अपनी आंखों के सामने मरते देखा। हजारों महिलाएं एक ही रात में विधवा हो गईं और अनेक जीवित बचे लोगों ने भयावह यौन ड़्क्षहसा की ऐसी कहानियां सुनाईं, जिनके शारीरिक और मानसिक घाव आज तक नहीं भरे हैं। गाजा के लिए आंसू बहाने से पहले सोनिया गांधी स्वयं से एक प्रश्न पूछें–क्या उन्होंने कभी सतनामी बाई के आंसू पोंछने की कोशिश की है? सतनामी बाई की गवाही 1984 के सिख विरोधी नरसंहार की सबसे हृदयविदारक गवाहियों में से एक है। 1 नवम्बर, 1984 को त्रिलोकपुरी में उन्होंने अपनी आंखों के सामने अपने पति मोहन सिंह, जो एक गरीब ऑटो–रिक्शा चालक थे, को लोहे के सरियों से पीट–पीटकर और जिंदा जलाकर मार डाले जाते देखा, जबकि उनकी गोद में उनकी नवजात बेटी थी। उस समय जब कानून व्यवस्था पूरी तरह ध्वस्त हो चुकी थी, उन्होंने और अनेक अन्य सिख महिलाओं ने बाद में भीड़ द्वारा किए गए भयावह यौन अत्याचारों का वर्णन किया। उनकी जिंदगी हमेशा के लिए बदल गई। क्या सोनिया गांधी ने कभी सार्वजनिक रूप से सतनामी बाई का नाम लिया? क्या वह कभी उनसे मिलीं, उन्हें गले लगाया या 1984 में सिख महिलाओं पर हुए अकल्पनीय अत्याचारों पर गहरा दुख व्यक्त किया? क्या उन्होंने कभी प्रत्येक पीड़ित को पूर्ण न्याय दिलाने की मांग की? दिल्ली में यह भयावहता समाप्त नहीं हुई। इसके बाद पंजाब वर्षों तक खून से लथपथ रहा। एक पूरी पीढ़ी आतंकवाद और आतंकवाद–रोधी अभियानों के बीच बड़ी हुई। हजारों परिवार अपने उन बेटों की तलाश करते रहे, जो कभी वापस नहीं लौटे। जबरन गायब किए जाने, अवैध अंतिम संस्कार, हिरासत में यातना और फर्जी मुठभेड़ों के आरोपों ने पंजाब के इतिहास पर गहरे घाव छोड़े। जत्थेदार गुरदेव सिंह कौंके की हिरासत में हत्या आज भी उस दौर के सबसे दर्दनाक प्रतीकों में से एक है। भारत के सबसे राष्ट्रवादी और देशभक्त समुदायों में से एक, सिख समुदाय, जिसने देश की आजादी, एकता और सुरक्षा के लिए अतुलनीय बलिदान दिए, उसे आतंकवादियों की करतूतों के कारण संदेह की दृष्टि से देखा गया। जिस समुदाय ने भारत को अनगिनत शहीद दिए, उसी समुदाय को ऐसे बोझ का सामना करना पड़ा जिसका वह कभी दोषी नहीं था। सोनिया गांधी को अपने दिवंगत पति राजीव गांधी का वह बयान भी याद रखना चाहिए, जो उन्होंने 1984 की हिंसा के बाद दिया था–'जब बड़ा पेड़ गिरता है तो धरती हिलती है।' इस बयान की व्यापक रूप से आलोचना हुई क्योंकि इसे उस भीषण ड़्क्षहसा को उचित ठहराने या उसकी गंभीरता को कम करके दिखाने के रूप में देखा गया। असंख्य सिख परिवारों के लिए यह बयान कांग्रेस की उस विफलता का प्रतीक बन गया, जिसमें उसने पीड़ितों के साथ बिना किसी शर्त के खड़े होने का नैतिक साहस नहीं दिखाया। नरसंहार के बाद भी कांग्रेस की राजनीतिक भाषा और उसके कुछ चुनावी विज्ञापन, जिन्हें अनेक सिखों ने समुदाय को राष्ट्रीय सुरक्षा और भय के चश्मे से देखने का प्रयास माना, ने घाव भरने की बजाय अलगाव की भावना को और गहरा किया। और आज वही सोनिया गांधी गाजा के मुद्दे पर नैतिकता का सर्वोच्च मंच ग्रहण करने का प्रयास कर रही हैं। हर निर्दोष नागरिक का जीवन चाहे वह फिलिस्तीनी हो, इसराईली, भारतीय या किसी भी अन्य देश का नागरिक, अनमोल है। भारत ने हमेशा मानवीय सहायता, निर्दोष नागरिकों की सुरक्षा और संवाद के माध्यम से शांतिपूर्ण समाधान का समर्थन किया है। लेकिन नैतिक विश्वसनीयता के लिए निरंतरता आवश्यक है। भारत को मानवता का पाठ पढ़ाने से पहले सोनिया गांधी को यह जवाब देना चाहिए कि उन्होंने दिल्ली की सिख विधवाओं, 1984 के अनाथ बच्चों, दशकों तक न्याय की प्रतीक्षा करने वाले परिवारों और पंजाब के पीड़ितों के लिए कभी वही नैतिक संवेदनशीलता क्यों नहीं दिखाई, जो आज गाजा के लिए प्रदर्शित कर रही हैं। यह मानने के पर्याप्त कारण हैं कि यह लेख सार्वभौमिक मानवाधिकारों से अधिक भारत की घरेलू राजनीति से प्रेरित है।

मंदिर के चढ़ावे से विपक्षी सांसदों तक डाकेजनी!

राजेंद्र शर्मा

अयोध्या के राम मंदिर चढ़ावा डकैती कांड का ऊंट आखिरकार किस करवट बैठेगा, यह अभी कहना मुश्किल है। इस कांड के सूत्र जिस तरह से खुल रहे हैं और धीरे–धीरे नहीं बल्कि तेजी से प्रधानमंत्री कार्यालय की ओर बढ़ रहे हैं, उसे देखते हुए इस पूरे मामले की ईमानदारी से तथा गहरी जांच–पड़ताल होने और छोटे–बड़े सभी दोषियों को सजा दिलाए जाने की उम्मीद शायद ही किसी को होगी। आम धारणा तो यही है कि यह कांड इतना बड़ा हो गया है तो, छोटी–छोटी मछलियां जरूर जाल में पकड़ी जाएंगी, लेकिन मगरमच्छों को बचा दिया जाएगा। अयोध्या में राम मंदिर के मुख्य कर्ताधर्ता माने जाने वाले चंपत राय और अनिल मिश्रा के इस्तीफा देकर खुद को इस कांड से अलग कर लेने और मंदिर ट्रस्ट के 8 छोटे कारकूनों के खिलाफ कथित रूप से ट्रस्ट की शिकायत के आधार पर, जो कि योगी सरकार द्वारा गठित विशेष जांच दल (एसआईटी) प्रारंभिक रिपोर्ट आने के बाद करायी गयी, एफआईआर दर्ज किए जाने और उनके ठिकानों पर छापेमारी, जब्ती आदि और उनकी गिरफ्तारियों से, चढ़ावे में चोरी के शिकार, रामलला को न्याय मिलने की उम्मीदें नहीं बढ़ी हैं। दूसरी ओर, लूट कांड पर से पर्दा हटना शुरू होने के बाद से, उत्तर प्रदेश की योगी सरकार की सक्रियता ने, सत्ताधारी डबल इंजन सरकार के दो इंजनों के बीच खींच–तान की अटकलों को और बल दे दिया है। यह किसी से छुपा हुआ नहीं है कि राम मंदिर के संचालन के तंत्र के विशेष रूप से उच्चतर हलके, जिसमें ट्रस्टी आदि आते हैं, केंद्र वाले इंजन द्वारा चुन–चुनकर वहां बैठाए गए हैं और उनकी वफादारी सबसे बढ़कर प्रधानमंत्री कार्यालय के प्रति है। चंपत राय तो प्रधानमंत्री मोदी को श्विष्णु का अवतारश घोषित कर, इसकी पुष्टि भी कर चुके हैं। स्वाभाविक रूप से मुख्यमंत्री योगी इस स्थिति को लेकर सहज नहीं हैं, जो उन्हें अपने अधिकार क्षेत्र में अनुचित अतिक्रमण जैसी लगती है। इसीलिए, उत्तर प्रदेश के राजनीतिक परिदृश्य के अनेक प्रेक्षकों को लगता है कि इस कांड पर से मीडिया के एक हिस्से द्वारा पर्दा उठाए जाने के बाद से, एसआईटी के गठन में तत्परता समेत योगी सरकार की सक्रियता, सिर्फ सत्ताधारी भाजपा के मुख्यमंत्री के नाते डैमेज कंट्रोल करने की उनकी चिंता को ही नहीं दिखाती है। इसके पीछे, केंद्रीय हस्तक्षेप के औजारों का रास्ता मुश्किल बनाने की कोशिश भी है। इस धारणा को इस तथ्य से भी बल मिलता है कि बाबरी मस्जिद–रामजन्म भूमि विवाद पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले से विशाल राम मंदिर बनने का रास्ता साफ होने के बाद से ही, मंदिर के निर्माण से संबंधित निर्णयों पर बार–बार विवाद उठते रहे थे, जिनमें प्रस्तावित मंदिर के आस–पास के इलाकों में जमीनों की खरीद–बिक्री में बेहिसाब कमाई से लेकर, मंदिर निर्माण में कमीशनखोरी तक के आरोप शामिल थे। वृहत मंदिर परियोजना के लिए तिगुने–चौगुने से भी ज्यादा दामों पर जमीनों की खरीद को लेकर मीडिया में काफी शोर भी मचा था और विपक्षी राजनीतिक पार्टियों ने भी इन गड़बड़ियों को उठाया था। इसके बावजूद, योगी सरकार ने इससे पहले कभी इन आरोपों की जांच कराना तो दूर, उनका नोटिस तक लेना जरूरी नहीं समझा था। इसलिए, इस बार के भंडाफोड़ के बाद योगी सरकार द्वारा दिखाई गयी सक्रियता को बहुत से लोग, केंद्र तथा योगी और खासतौर पर अमित शाह और योगी के बीच, योगी के वर्तमान कार्यकाल के बड़े हिस्से में और खासतौर 2024 के आम चुनाव के बाद से, बिना ज्यादा पर्दे के चलते आए, शह–मात के खेल में, योगी के अपनी स्थिति मजबूत करने के पैंतरे के रूप में देख रहे हैं। संभवतः इसीलिए, इस पूरे घटनाक्रम से जुड़कर, किंतु इसके हाशिए पर उत्तर प्रदेश में जो कुछ हो रहा था, वह भी कम दिलचस्प नहीं है। याद रहे कि इस रामलला लूट कांड पर से पर्दा उठाने में, उत्तर प्रदेश की मुख्य विपक्षी पार्टी, सपा की अग्रणी भूमिका रही है। पहले, समाजवादी पार्टी के एक मंझले स्थानीय नेता, पवन पांडेय ने इस घोटाले का मुद्दा उठाया था। सोशल मीडिया में इस संबंध में चर्चाओं के जोर पकड़ने के बाद, अप्रत्याशित रूप से सत्ताधारी भाजपा के समर्थक माने जाने वाले, एक प्रमुख हिंदी दैनिक ने इस भंडाफोड़ को आगे बढ़ाया। और इसके बाद, सपा अध्यक्ष, अखिलेश यादव ने इस मुद्दे को उठाकर, सारे देश के ही ध्यान में ला दिया। बहरहाल, जब इस मंदिर के चंदाचोरी का भंडाफोड़ अपने शुरूआती दौर में ही था, उसी दौरान भाजपा के और सुहेलदेव समाज जैसी उसकी सहयोगी पार्टियों के कुछ नेताओं ने, उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी में बड़ी फूट पड़ने और उसके 25–26 सांसदों के पार्टी से अलग होने की तैयारियां कर रहे होने के दावे करने शुरू कर दिए। ये दावे करने वालों में प्रदेश के उप–मुख्यमंत्री, केशव प्रसाद मौर्य और मंत्री ओपी राजभर के नाम सबसे प्रमुख थे। ये दावे प. बंगाल से तृणमूल कांग्रेस के कुल 27 में से 20 लोकसभा सदस्यों को, भाजपा की वृहत्तर कार्ययोजना के तहत तोड़े जाने और उनका एक अज्ञात साइन बोर्ड पार्टी के साथ विलय कराए जाने और उसके फौरन बाद, महाराष्ट्र में शिव सेना (उद्धव बाल ठाकरे) के छरू सांसदों को तोड़कर, उनका शिव सेना से ही टूटकर अलग हुए, भाजपा के सहयोगी शिंदे गुट में विलय कराने की तैयारियों के बीच, किए जा रहे थे। इससे यह सब एक वृहत्तर योजना का हिस्सा बन जाता है। यह वृहत्तर योजना है, महिला आरक्षण के लागू होने का रास्ता बनाए जाने की आड़ में, लोकसभा की सीटों की संख्या डेढ़ गुनी करते हुए, संसदीय क्षेत्रों के नये परिसीमन को थोपने की। याद रहे कि बजट सत्र के आखिर में भाजपा ने, विपक्ष से किसी प्रकार की चर्चा किए बिना, इसके लिए संविधान संशोधन विधेयक को एक प्रकार से धक्के से पारित कराने की कोशिश की थी। लेकिन, विपक्ष के एकजुट विरोध ा के सामने यह कोशिश विफल हो गयी क्योंकि सत्ताधारी भाजपा और उसके सहयोगी मिलकर भी, संविधान संशोधन प्रस्ताव पारित कराने के लिए आवश्यक दो–तिहाई बहुमत से काफी पीछे रह गए। संसद में इस खेल का रास्ता रुक जाने के बावजूद, भाजपा ने इस योजना को छोड़ा नहीं। विधानसभाई चुनाव के पिछले चक्र में, पश्चिम बंगाल में पहली बार सत्ता पर काबिज होने और तमिलनाडु के चुनाव में हार के बाद डीएमके पार्टी के विपक्षी इंडिया गठबंधन से अलग होने के बाद, भाजपा को जोड़–तोड़ और खरीद–फरोख्त से दो–तिहाई बहुमत जुगाड़ना अपनी पहुंच में नजर आने लगा।

लैरी द कैट और प्रधानमंत्री मोदी

सर्वमित्रा सुरजन

ब्रिटेन में पिछले सात सालों में छह प्रधानमंत्री बदल चुके हैं। हाल ही में कीर स्टार्मर ने भी पद छोड़ दिया है। इस्तीफा देने के बाद प्रधानमंत्री आवास 10 डाउनिंग स्ट्रीट के बाहर राष्ट्र को संबोधित करते हुए स्टार्मर ने कहा कि लेबर पार्टी को नहीं लगता कि मैं अगले चुनाव में नेतृत्व करने के लिए सही व्यक्ति हूं। फिलहाल वे नए प्रधानमंत्री के चयन तक कार्यवाहक प्रधानमंत्री का पद संभालते रहेंगे। गौरतलब है कि स्टार्मर जुलाई 2024 के आम चुनाव में ऐतिहासिक जीत के साथ सत्ता में आए थे। उस समय लेबर पार्टी ने भारी बहुमत हासिल किया था और उनसे बड़े बदलावों की उम्मीद की जा रही थी। लेकिन जल्द ही उनकी सरकार कई विवादों और राजनीतिक चुनौतियों से घिर गई। सरकार की कर नीति, सामाजिक कल्याण योजनाओं में बदलाव, आर्थिक मोर्चे पर चुनौतियां और एपस्टीन फाइल्स में अमेरिका में ब्रिटेन के पूर्व राजदूत लॉर्ड पीटर मैंडेलसन का नाम आना, जैसे मुद्दों के कारण लगातार आलोचना का कारण बनीं। वैश्विक हालात में बढ़ती चुनौतियां और देश में सरकार की घटती लोकप्रियता ने सत्ता से उनकी विदाई का रास्ता बनाया। अब स्टार्मर के बाद फिलहाल एंडी बर्नहम का नाम प्रधानमंत्री पद की दौड़ में सबसे ऊपर है। बर्नहम अगर इस पद पर बैठते हैं तो देखना होगा कि तमाम चुनौतियों का सामना करते हुए क्या वे अपना कार्यकाल पूरा करेंगे। ब्रिटेन की शासन व्यवस्था में निचले सदन यानी हाउस ऑफ कॉमन्स के चुनाव पांच साल में होते हैं, और इसमें बहुमत पाने वाला दल ही सरकार बनाता है। इस दल के नेता यानी प्रधानमंत्री को यह अधिकार होता है कि वे 5 साल का कार्यकाल पूरा होने से पहले भी राजा को सलाह देकर संसद भंग करवा सकते हैं और नए चुनाव की घोषणा कर सकते हैं। ब्रिटेन में एक के बाद एक प्रधानमंत्रियों के इस्तीफे का मजाक सोशल मीडिया पर खूब बनाया जा रहा है। कहा जा रहा है कि जिन लोगों ने दुनिया भर पर राज किया और कई बार दावा किया कि हमने इन्हें शासन करना सिखाया, उनसे आज अपनी ही सत्ता नहीं संभाली जा रही हैं। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री आवास में पिछले 15 साल से बनी हुई लैरी नाम की बिल्ली भी खूब चर्चा में है। लैरी वहां चूहों को पकड़ने वाली मुख्य बिल्ली के तौर पर तैनात है और उसने अपने रहते 6 प्रधानमंत्रियों कृडेविड कैमरून, थेरेसा मे, बोरिस जॉनसन, लिज ट्रस, ऋषि सुनक और कीर स्टार्मर को देख लिया है। लैरी को लेकर कहा जा रहा है कि राजनीति में असली दबदबा तो इसी का है, जो प्रधानमंत्री आवास में बनी हुई है। हंसी–मजाक से परे यह एक गंभीर चर्चा का विषय है कि ब्रिटेन में प्रधानमंत्रियों के इस्तीफे को सत्ता की अस्थिरता की तरह देखा जाए या लोकतंत्र की परिपक्वता और मजबूती की तरह। हाल–फिलहाल में किसी ब्रिटिश प्रधानमंत्री से यह गर्वोक्ति नहीं सुनी गई कि हमारा इतिहास ऐसा था, वैसा था और हम लोकतंत्र का कितना सम्मान करते हैं। इस बड़बोलेपन के बिना भी लोकतंत्र का सम्मान करते हुए प्रधानमंत्रियों के इस्तीफे हुए ताकि जनता की भावना उपेक्षित न हो। ब्रिटेन में न किसी को संविधान हाथ में लेकर घूमने की जरूरत पड़ती है कि वह लोगों को बताए कि इसे बचाना है, न वहां किसी चुनाव में मुद्दा यह रहा है कि हमें संविधान और लोकतंत्र बचाना है, न वहां के किसी प्रधानमंत्री ने यह दावा किया कि अब उसी की सत्ता कायम रहेगी। यह दावा तो राजशाही के लिए सुरक्षित है, द किंग इज डेड, लान्ग लिव द किंग, यानी राजा मर गया, राजा अमर रहे, यह वाक्य ही बताता है कि राजशाही कायम रहेगी। लेकिन लोकतंत्र तो ऐसे नहीं चल सकता कि जनता में आपके लिए रोष दिखे, नाराजगी दिखे, आपके फैसलों पर असहमति दिखे, तो उसे नजरंदाज करते हुए भी आप सत्ता पर न केवल बने रहें, बल्कि विरोध के लोकतांत्रिक अधिकार को हिकारत से देखें। जब किसान आंदोलन देश में हुआ था, तब बहुत से तथाकथित सभ्य, संभ्रांत लोगों को यह तकलीफ हुई थी कि उनकी आवाजाही के रास्ते बाधित हो रहे हैं। ऐसे ही लोगों के समर्थन के कारण प्रधानमंत्री मोदी ने आंदोलनकारियों के लिए आंदोलनजीवी जैसा निकृष्ट शब्द बोलने का दुस्साहस सदन में किया था। क्योंकि तब तक नरेन्द्र मोदी को यह यकीन हो चुका था कि धर्म की अफीम और हिंदुत्व की खुराक इस देश के एक तबके को इतनी पिलाई जा चुकी है जो उनके फैसले पर सवाल करना भूल जाएगा। जिन लोगों ने इस खुराक को लेने से मना किया, उन्होंने सवाल उठाने जारी रखे। किसानों को खालिस्तानी, विदेशी ताकतों का एजेंट, एसी में बैठकर आंदोलन करने वाले जैसे तंज कसे गए, लेकिन किसान अपनी मांग से टस से मस नहीं हुए और तीन कृषि कानून वापस लिए गए। सरकार ने किसी दबाव में फैसला तो बदला लेकिन लोकतंत्र में आंदोलन और विरोध का स्वाभाविक अधिकार शायद अब भी उसकी समझ में नहीं आया है। इसलिए राहुल गांधी की कोटा में छात्रों की गूंज रैली के बाद धर्मेन्द्र प्रधान ने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों में दहशतगर्द तैयार किए जाते हैं। बात यहीं तक नहीं रुकी, अब जंतर–मंतर पर कॉकरोच जनता पार्टी के बैनर तले धर्मेन्द्र प्रधान के इस्तीफे की मांग की जा रही है, इसके लिए सोनम वांगचुक चार दिनों से अनशन पर हैं, उनके अलावा कुछ और लोग भी अनशन कर रहे हैं, देश भर से लोग इस आंदोलन को अपना समर्थन देने और आंदोलनकारियों को मदद देने पहुंच रहे हैं, तो यह भी लोगों की सरकार से नाराजगी का इजहार ही है। लेकिन भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष इन आंदोलनकारियों को वायरस कह रहे हैं। हाल ही में नितिन नबीन ने कहा कि भाजपा का कार्यकर्ता ऐसे कॉकरोचों और वायरसों से निपटना जानता है। अब नितिन नबीन और प्रधानमंत्री मोदी से सवाल यह है कि क्या उनकी नजर में इस देश के लोगों की हैसियत कॉकरोच और वायरस जैसी ही है। अगर आंदोलनकारी कुछ ऐसा करें जो गैरकानूनी है, तो उन पर कानूनी कार्रवाई की जगह क्या भाजपा के कार्यकर्ताओं को छोड़ दिया जाएगा कि जाओ निपट लो। कॉकरोच जनता पार्टी कोई राजनैतिक दल नहीं है, और फिलहाल उसका उद्देश्य केवल धर्मेन्द्र प्रधान का इस्तीफा ही है। क्या यह संगठन आगे जाकर किसी राजनैतिक दल का आकार लेगा, इसका उद्देश्य क्या होगा, विचारधारा कौन सी रहेगी, यह सब बाद के सवाल हैं। फिलहाल ऐसे नाम से संगठन बनाने की जरूरत ही इसलिए पड़ी क्योंकि मुख्य न्यायाधीश ने बेरोजगार युवकों के लिए कॉकरोच शब्द का इस्तेमाल किया था। भले उन्होंने उस समय इस पर सफाई दे दी, लेकिन बात तो निकल चुकी है और दूर तलक जा रही है। भाजपा ने उस समय भी देश के युवाओं के लिए कॉकरोच शब्द कहने पर कोई ऐतराज नहीं जताया था और अब खुद उसके अध्यक्ष आंदोलनकारियों को वायरस कह रहे हैं, केन्द्रीय मंत्री इन्हें आतंकवादी बता रहे हैं। इससे पहले जेएनयू से भाजपा को तकलीफ थी और वहां सत्ताविरोधी आवाज उठी तो उन्हें भी देश विरोधी और टुकड़े–टुकड़े गैंग जैसे शब्द कहे गए। देश में मोदी सरकार से पहले भी अन्य सरकारों के खिलाफ धारना–प्रदर्शन–आंदोलन सब हुए। जिंदा लोकतंत्र की पहचान यही है कि जनता अपने हक के लिए जागरुक दिखे और सरकार की जो बात उसे अपने हितों के खिलाफ लगे, उस पर आवाज उठाए। लेकिन 2014 से पहले की किसी सरकार ने आंदोलन शब्द और आंदोलनकारियों को इस तरह अपमानित नहीं किया, जो असल में लोकतंत्र का अपमान है। कांग्रेस नेता शशि थरूर ने मनमोहन सिंह सरकार के किफायत बरतने वाले निर्देश पर जब हवाई जहाज की इकॉनामी क्लास के लिए कैटल क्लास यानी मवेशियों का वर्ग जैसा जुमला इस्तेमाल किया था,

कागज दिखाना मौजूदा दौर की सबसे बड़ी त्रासदी!

भाजपा के शासन में कागज की अहमियत इंसान से ज्यादा हो चुकी है। कागज तो दिखाना होगा, मौजूदा दौर का सबसे त्रासद वाक्य है, जिससे लाखों–करोड़ों नागरिक जूझ रहे हैं। खबर आई है कि मंगलवार को हुई केबिनेट बैठक में प्रधानमंत्री मोदी ने निर्देश दिए हैं कि आम लोगों की सुविधा का ख्याल रखा जाए। लेकिन यह कैसा ख्याल रखना है जिसमें कदम–कदम पर आम जनता को यही साबित करना पड़े कि वह इस देश का नागरिक है। राशन कार्ड, आधार, पैन कार्ड, दसवीं का प्रमाणपत्र, मतदाता पहचान पत्र, पासपोर्ट ये सारे कार्ड किसी व्यक्ति के पास होने के बावजूद यह तय नहीं है कि वह भारत का नागरिक है या नहीं। पासपोर्ट पर तो हाल ही में विदेश मंत्रालय का बयान आया ही था कि यह केवल यात्रा दस्तावेज है, नागरिकता का प्रमाण नहीं, जबकि दूसरे देश जाने पर आपको किस देश का नागरिक माना जाए, यह आपके पासपोर्ट से ही तय होगा। पासपोर्ट पर एक अनावश्यक विवाद मोदी सरकार ने खड़ा किया और हाल ही में उसी से जुड़ा एक अजीबोगरीब प्रकरण सामने आया है। कोलकाता से निकलने वाले प्रमुख अंग्रेजी दैनिक द टेलीग्राफ के पूर्व संपादक आर. राजगोपाल का पासपोर्ट नवीनीकृत नहीं हुआ, क्योंकि एसआईआर में उनका नाम लाखों अन्य लोगों की तरह काटा गया है। आर. राजगोपाल ने सोशल मीडिया पर अपने साथ घटे इस त्रासद वाकये को बयां किया है कि मार्च 2026 में कोलकाता के बालीगंज विधानसभा क्षेत्र की मतदाता सूची से उनका नाम हटा दिया गया। उनके अनुसार, एसआईआर के दौरान अधिकारियों को न तो उनका और न ही उनके दिवंगत पिता का नाम वर्ष 2002 की मतदाता सूची में मिला। इसी आधार पर उनका नाम सूची से हटा दिया गया। राजगोपाल ने लिखा कि उनके पिता एक गांधीवादी, सेवानिवृत्त प्रोफेसर और केरल में गांधी स्मारक निधि के पूर्व राज्य सचिव थे, जिनका 2016 में निधन हो चुका है। उन्होंने सवाल उठाया कि इतने सजग मतदाता रहे उनके पिता का नाम मतदाता सूची में कैसे नहीं मिला। राजगोपाल का कहना है कि पश्चिम बंगाल में लगभग 27 लाख लोगों के नाम तथाकथित श्लॉजिकल डिस्क्रेपेंसीश के आधार पर मतदाता सूची से हटाए गए। उन्होंने मैट्रिकुलेशन प्रमाणपत्र समेत अन्य दस्तावेज जमा किए, लेकिन उन्हें कोई साफ कारण नहीं बताया गया। राजगोपाल समेत हजारों लोगों का मामला अब सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर गठित एक ट्रिब्यूनल के सामने लंबित है। इसी वजह से वे हाल में हुए चुनाव में मतदान भी नहीं कर सके। राजगोपाल ने बताया कि उन्होंने 19 मार्च 2026 को पासपोर्ट नवीनीकरण के लिए बायोमेट्रिक प्रक्रिया पूरी कर ली थी, लेकिन पुलिस सत्यापन नहीं हो सका क्योंकि उनका नाम मतदाता सूची में नहीं था। उन्होंने कई वैकल्पिक दस्तावेज जमा किए, लेकिन उन्हें पर्याप्त नहीं माना गया। 27 जून को उनके बायोमेट्रिक हुए 100 दिन पूरे हो गए। पिछले सप्ताह उन्हें पासपोर्ट कार्यालय से बताया गया कि कोलकाता पुलिस ने मतदाता सूची से नाम हटने के आधार पर प्रतिकूल रिपोर्ट भेजी है। हालांकि उन्हें क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय में तत्काल उपस्थित होने को कहा गया, लेकिन ऑनलाइन अपॉइंटमेंट 17 जुलाई 2026 की मिली। कितनी हैरानी की बात है कि एक प्रतिष्ठित अखबार के संपादक का पासपोर्ट नवीनीकरण अब तक इसलिए नहीं हो पाया, क्योंकि मतदाता सूची में उनका नाम नहीं था और पुलिस ने इसे ही आधार माना। जबकि केंद्र और राज्य सरकारें पत्रकारों व संपादकों को अधिमान्यता भी देती हैं। इसमें भी उनके तमाम दस्तावेज जांचे–परखे जाते हैं। फिलहाल यह ज्ञात नहीं है कि राजगोपाल के पास इस समय राज्य अधिमान्यता कार्ड या पत्र सूचना कार्यालय की तरफ से जारी कार्ड है या नहीं, लेकिन जब उनके जैसे प्रतिष्ठित संपादक को कागज दिखाने के नाम पर मानसिक संताप से गुजरना पड़ा है, तो आम लोगों की बिसात ही क्या है। खुद राजगोपाल ने यह लिखा है कि वे खुद को पीड़ित की तरह नहीं दिखाना चाहते, लेकिन इतने वर्षों की पत्रकारिता और अखबार का संपादन करने के बाद उन्हें अपनी पहचान साबित करने के लिए इतना संघर्ष करना पड़ रहा है, तो समाज के सबसे कमजोर और हाशिए के लोगों की स्थिति कितनी मुश्किल होगी। यह तथ्य किससे छिपा है कि आम लोगों के जीवन में रोजी–रोटी कमाने से लेकर शिक्षा, इलाज जैसी मूलभूत सुविधाओं को हासिल करने में सौ झंझटें हैं, इनसे निपटने में ही तीन चौथाई जीवन गुजर जाता है। इसके बाद बार–बार अपने को नागरिक साबित करने के लिए साक्ष्य जुटाने पड़ें तो थक–हार कर व्यक्ति यह कोशिश भी छोड़ देता है। इसी वजह से लाखों काबिल वोटर बिहार में वोट नहीं डाल पाए और फिर बंगाल में यही खेल हुआ। इसके बाद प्रधानमंत्री आम आदमी की सुविधा और इज ऑफ डूइंग जैसे जुमले कहें तो वह जले पर नमक छिड़कने जैसा लगता है। सरकार के ऐसे फैसलों से देश में कितना बड़ा नागरिक संकट खड़ा हो चुका है, इसकी बड़ी मिसाल राजगोपाल प्रकरण में देखी जा सकती है। अगर उनका पासपोर्ट समय पर नवीनकृत होता तो वे 17 अप्रैल को सैन फ्रांसिस्को में अपनी बेटी की शादी में शामिल हो सकते थे।

ग़ज़ल

जहाँ नज़रों से वहशत झाँकती है
वहाँ हर पल मुहब्बत काँपती है

फ़रिश्तों ये तुम्हारा शहर कैसा
हर एक पूजा इबादत काँपती है

मेरी हस्ती कि कच्चा घर हुई है
कभी चौखट कभी छत काँपती है

मिटी हैं यूँ वफ़ादारी की रस्में
बुजुर्गों की नसीहत काँपती है

ये कैसी ग़फ़लतों का दौर या रब
मेरी जीने की हिम्मत काँपती है

डॉ० अवनीश यादव
पी०ई०एस०
(प्रांतीय शिक्षा सेवा संवर्ग)
उत्तर प्रदेश

सलमान की 'मातृभूमि' पर सीबीएफसी ने लगाई रोक, जानें क्या है वजह, अब कब तक रिलीज होगी फिल्म ?

सलमान खान की फिल्म श्मातृभूमिश, जो भारतीय और चीनी सेनाओं के बीच 2020 में हुई गलवान घाटी की झड़प पर आधारित है, असल में ईद के मौके पर 17 अप्रैल को रिलीज होने वाली थी। तब फिल्म का नाम 'बैटल ऑफ गलवां' था, बाद में नाम बदल दिया गया। फिर इस तारीख को आगे बढ़ा दिया गया और उम्मीद थी कि फिल्म अगस्त में सिनेमाघरों में आएगी। हालांकि, अब खबरें हैं कि सीबीएफसी ने फिल्म को रोक दिया है, जिससे इसके अगस्त की समयसीमा तक रिलीज होने की संभावना कम हो गई है। एनडीटीवी की रिपोर्ट के अनुसार, सीबीएफसी ने सलमान की फिल्म श्मातृभूमिश के लिए मंजूरी का सर्टिफिकेट अगले आदेश तक रोक दिया है। रिलीज होने से पहले ही इस फिल्म को लेकर चीन में विवाद खड़ा हो गया था। इसका टीजर ऑनलाइन आने के बाद कई मपइव यूजर्स ने फिल्म पर गलवान घाटी की झड़प को गलत तरीके से दिखाने का आरोप लगाया। विदेश मंत्रालय ने जनवरी में इस मामले पर कहा कि भारत में फिल्म बनाने से जुड़े मामलों को संबंधित अधिकारी देखते हैं और ऐसे मामलों में विदेश मंत्रालय की कोई भूमिका नहीं होती। उन्होंने बॉर्डर पर डिसइंगेजमेंट एग्रीमेंट (सेनाओं को पीछे हटाने का समझौता) को लागू करते समय हुई झड़प के दौरान भारतीय सैनिकों का नेतृत्व किया था। अपूर्व लाखिया के निर्देशन में बनी 'मातृभूमि' को सलमान खान फिल्म्स बैनर के तहत सलमा खान ने प्रोड्यूस किया है। फिल्म में चित्रांगदा सिंह के साथ–साथ अभिलाष चौधरी और अंकुर भाटिया भी अहम भूमिकाओं में हैं और इसका संगीत हिमेश रेशमिया ने दिया है।

> रिलीज होने से पहले ही इस फिल्म को लेकर चीन में विवाद खड़ा हो गया था। इसका टीजर ऑनलाइन आने के बाद कई मपइव यूजर्स ने फिल्म पर गलवान घाटी की झड़प को गलत तरीके से दिखाने का आरोप लगाया।

मिर्जापुरः द मूवी में नए अंदाज में दिखेंगे गुड्डू पंडित, अली फजल का बदला हुआ अवतार करेगा सरप्राइज

मिर्जापुर फ्रेंचाइजी के सबसे चर्चित किरदारों में शामिल गुड्डू पंडित अब बड़े पर्दे पर एक नए अवतार में नजर आने वाले हैं। वेब सीरीज के तीन सफल सीजन के बाद मिर्जापुर द मूवी में दर्शकों को उनके किरदार का पहले से कहीं अधिक परिपक्व और अलग रूप देखने को मिलेगा। फिल्म में अली फजल अपने लोकप्रिय किरदार को एक नए स्तर पर ले जाते दिखाई देंगे, जो कहानी में भी बड़ा बदलाव लेकर आएगा। इंडस्ट्री के एक स्वतंत्र सूत्र के अनुसार, मिर्जापुर द मूवी में गुड्डू पंडित का कैरेक्टर आर्क फिल्म की सबसे बड़ी खासियतों में से एक होगा। टीजर में उनके दमदार स्क्रीन प्रेजेंस और ऑरा की झलक पहले ही देखने को मिल चुकी है। अब तक दर्शकों ने गुड्डू पंडित को एक साधारण युवक से बदले की आग में जलते हुए और फिर सत्ता की लड़ाई में सबसे मजबूत खिलाड़ी बनते देखा है। फिल्म में उनके व्यक्तित्व, सोच और व्यवहार के नए पहलुओं को सामने लाया जाएगा, जिससे दर्शकों को इस किरदार का बिल्कुल अलग रूप देखने को मिलेगा। मिर्जापुर के तीनों सीजन में गुड्डू पंडित का गुस्सैल, बेखौफ और हिंसक रूप दर्शकों के सामने आ चुका है। ऐसे में फिल्म में सबसे बड़ा आकर्षण यह होगा कि उनके किरदार में नया क्या देखने को मिलेगा। सूत्रों के मुताबिक, इस बार कहानी का फोकस केवल उनकी ताकत या एक्शन पर नहीं होगा, बल्कि उनके व्यक्तित्व के नए आयाम और बड़े पर्दे के अनुरूप तैयार किए गए प्रभावशाली स्क्रीन प्रेजेंस पर रहेगा। यही बदलाव फिल्म को वेब सीरीज से अलग अनुभव देने का काम करेगा। मिर्जापुर द मूवी को अमेजन एमजीएम स्टूडियोज और एक्सेल एंटरटेनमेंट प्रस्तुत कर रहे हैं। फिल्म का निर्देशन गुरमीत सिंह ने किया है, जबकि इसकी कहानी पुनीत कृष्णा ने लिखी है। रितेश सिधवानी और फरहान अख्तर इसके निर्माता हैं, वहीं कासिम जगमागिया और विशाल रामचंद्रनी सह–निर्माता हैं। यह बहुप्रतीक्षित फिल्म 4 सितंबर 2026 को दुनिया भर के सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

इतनी मोटी लड़की को कोई कैसे काम दे सकता है ? एक्ट्रेस अंजलि आनंद ने बताया मोटापे की वजह से सुनने पड़ते है तानें

एक्ट्रेस अंजलि आनंद का करियर इन दिनों बहुत सुर्खियों में है। आए दिन वो बैक तो बैक बड़े प्रोजेक्ट्स का हिस्सा बन रही हैं। हाल ही में उन्हें रणबीर और आलिया के साथ रॉकी और रानी की प्रेम कहानी में देखा गया। इसके बाद उन्होंने बहुत से सीरीज डब्बा कार्टेल और रात जवान है जैसी सीरीज में भी खूब नाम कमाया है। अब वो जल्द ही अजय देवगन के साथ धमाल के चौथे पार्ट में दिखाई देंगी। हाल ही में उनका एक गाना गुलाबी साड़ी रिलीज हुआ है और दर्शकों की तरफ से इस गाने को खूब प्यार मिल रहा है। इसी कामयाबी के बीच अंजलि आनंद का दुःख छलका है। इतनी सफलता पाने के बावजूद भी उन्हें लोगों की बहुत बातें सुननी पड़ती हैं। इस मॉडर्न समय में भी उन्हें बॉडी शेमिंग का सामना करना पड़ता है। अंजलि ने बताया की सोशल मीडिया पर लोग उन्हें मोटी होने के बहुत तानें देते हैं। इतना ही नहीं कुछ लोग तो उन्हें खासतौर पर मैसेज कर के ट्रोल करते हैं। एक बातचीत के दौरान अंजलि ने अपना दुःख ब्यान करते हुए बताया कि मेरे से लोग एक ही सवाल करते हैं कि आप ऐसा क्या कर रही हैं, जो लोग आपको काम देने को तैयार हैं। ऐसा आप क्या करती हो उनके लिए जो लोग आपको काम दे रहे हैं। पतली–पतली फिट और सुन्दर लड़कियां आज भी घर बैठीं काम को तरस रही हैं। इसके बाद अंजलि ने बताया कि लोगों का सीधा ईशारा इसी तरफ होता है कि मैं किसी के साथ पक्का सोई होंगी, तभी वो लोग मेरे ऊपर फेवर कर रहे हैं। आज–कल के समय में लोग काम के काबिलियत से नहीं देखते, वो सिर्फ यही देखते है कि शायद मैंने किसी का फेवर किया होगा। मेरा मानना यही है कि मेरे काम की वजह से मुझे काम मिलता है न की साइज की वजह से मुझे रिजेक्ट किया जाता है। इसके बाद अंजलि ने ट्रोलर्स को करारा जवाब देते हुए कहा कि लोगों को अपने आप और अपने काम पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए। दूसरों के बारे में सोचना छोड़ दें। यदि आप अपनी लाइफ की मैन लीड हैं तो आप कभी भी कहीं भी हीरोइन बन सकती हैं।

बिपाशा बसु की फैमिली टाइम की झलक वायरल, बेटी की मोआना दीवानगी ने जीता फैंस का दिल

बॉलीवुड अभिनेत्री बिपाशा बसु ने एक बार फिर अपने परिवार के साथ बिताए खूबसूरत पलों की झलक सोशल मीडिया पर साझा की है। रुथ्उश्रंउ2026 के नाम से शेयर की गई तस्वीरों में उनके घर का स्नेहभरा माहौल, परिवार के साथ बिताया गया क्वालिटी टाइम और बेटी की पसंदीदा डिज्नी फिल्म मोआना ने लोगों का खास ध्यान खींचा। फैंस इन तस्वीरों को खूब पसंद कर रहे हैं और उन्हें एक परफेक्ट फैमिली मोमेंट बता रहे हैं। बिपाशा बसु ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर कई तस्वीरें शेयर की हैं, जिनमें पति करण सिंह ग्रोवर, बेटी, माता–पिता, भाई–बहन और करीबी दोस्तों के साथ बिताए गए यादगार पल नजर आ रहे हैं। इन तस्वीरों में परिवार के बीच प्यार, अपनापन और खुशियों से भरा माहौल साफ दिखाई देता है। पोस्ट की सबसे चर्चित तस्वीर वह रही, जिसमें घर के लिविंग रूम में टीवी पर डिज्नी की सुपरहिट एनिमेटेड फिल्म श्मोआनाश चल रही है। सामने गुलाबी रंग का प्ले टेंट और आसपास फैले बच्चों के खिलौने इस दृश्य को और भी प्यारा बना रहे हैं। यह तस्वीर हर उस परिवार की कहानी बयां करती है, जो बच्चों के साथ घर पर सुकून के पल बिताना पसंद करता है। तस्वीरों से साफ झलकता है कि बिपाशा की नन्ही बेटी मोआना की बड़ी फैन है। सोशल मीडिया पर इस झलक को देखकर फैंस ने भी खुशी जाहिर की। कई यूजर्स ने इसे क्यूटेस्ट फैमिली मोमेंट बताया, जबकि कुछ ने लिखा कि श्मोआनाश आज भी बच्चों की सबसे पसंदीदा एनिमेटेड फिल्मों में शामिल है। बिपाशा बसु की पोस्ट यह संदेश भी देती है कि व्यस्त जीवन के बीच परिवार के साथ बिताए गए छोटे–छोटे पल ही सबसे अनमोल होते हैं। उन्होंने तस्वीरों के जरिए दिखाया कि अपनों के साथ सुकून से समय बिताना किसी भी बड़ी उपलब्धि से कम नहीं है। मोआना सिर्फ मनोरंजन नहीं, बल्कि साहस, आत्मविश्वास और अपने सपनों को पूरा करने की प्रेरणा देने वाली कहानी है। फिल्म की नायिका चुनौतियों का सामना करते हुए अपने लक्ष्य तक पहुंचती है और बच्चों को खुद पर भरोसा रखने का संदेश देती है। यही वजह है कि यह फिल्म आज भी दुनियाभर के परिवारों की पसंद बनी हुई है। बिपाशा बसु की इस पोस्ट पर सोशल मीडिया यूजर्स लगातार प्यार बरसा रहे हैं। फैंस ने परिवार के बीच दिख रहे प्यार और बेटी की मासूमियत की जमकर तारीफ की। वायरल हो रही ये तस्वीरें एक बार फिर साबित करती हैं कि परिवार के साथ बिताए गए साधारण पल भी सबसे खूबसूरत यादें बन जाते हैं।

'हमें टाइटल से आपत्ति नहीं', श्रद्धा कपूर की 'ईठा' को मिला विठाबाई नारायणगांवकर की बेटी का समर्थन, कही ये बात

मशहूर लावनी और तमाशा कलाकार विठाबाई नारायणगांवकर पर बन रही फिल्म श्ईठाश के टाइटल को लेकर हाल ही में विवाद खड़ा हो गया था, जब दिवंगत कलाकार के परिवार के एक सदस्य ने इस पर आपत्ति जताई। हालांकि, अब विठाबाई की सबसे बड़ी बेटी ने परिवार का पक्ष साफ करते हुए कहा है कि उन्हें फिल्म के टाइटल से कोई दिक्कत नहीं है। फिल्म के टाइटल को लेकर हुए विवाद पर बात करते हुए विठाबाई की सबसे बड़ी बेटी मंगला बनसोडे करावडीकर ने चिंताओं को खारिज कर दिया। ई–टाइम्स से बात करते हुए उन्होंने कहा कि हमें फिल्म के टाइटल से कोई दिक्कत नहीं है। मैंने मोहित से बात की है और उनसे कहा है कि वे इस बारे में आगे कोई बयान न दें। यह टाइटल सही है क्योंकि उन दिनों, जिन गांवों में मेरी मां परफॉर्म करती थीं, वहां के लोग अक्सर उन्हें श्ईठाश कहकर बुलाते थे। मैंने फिल्म के डेवलपमेंट के दौरान डायरेक्टर लक्ष्मण उतेकर के साथ यह जानकारी शेयर की थी। मंगला ने आगे कहा कि मैं सात साल की उम्र से ही स्टेज पर परफॉर्म कर रही हूं और मैंने लोगों को अपनी मां को उस नाम से बुलाते हुए सुना है। बायोपिक पर खुशी जाहिर करते हुए मंगला ने कहा कि हमें खुशी है कि इस फिल्म के जरिए लोग मेरी मां के बारे में जान पाएंगे और यह भी कि वह अपनी कला के प्रति कितनी समर्पित थीं। आने वाली इस फिल्म का टाइटल तब चर्चा का विषय बन गया जब खबरों में कहा गया कि विठाबाई के पोते मोहित नारायणगांवकर ने श्ईठाश नाम पर आपत्ति जताई और मांग की कि टाइटल में दिवंगत कलाकार का पूरा नाम शामिल किया जाए। नेशनलिस्ट कांग्रेस पार्टी के फिल्म और संस्कृति विभाग ने भी फिल्म बनाने वालों से टाइटल पर फिर से विचार करने को कहा, साथ ही यह भी साफ किया कि उन्हें फिल्म से कोई आपत्ति नहीं है। लक्ष्मण उतेकर द्वारा निर्देशित 'ईठा' 28 अगस्त को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। विठाबाई नारायणगांवकर महाराष्ट्र की सबसे मशहूर तमाशा कलाकारों में से एक थीं। उन्हें 1957 और 1990 में भारत के राष्ट्रपति से मेडल मिले और महाराष्ट्र सरकार ने उन्हें श्तमाशा सम्राज्ञीश के सम्मान से नवाजा।

बरसात में बच्चों के लिए जहर हैं ये 5 चीजें, पेरेंट्स तुरंत निकाल दें डाइट से बाहर

पूरे देश में मानसून ने दस्तक दे दी है। ऐसे में इस मौसम में अपने लाइफस्टाइल और डाइट का खास ध्यान रखना पड़ता है। खासकर बच्चों की हेल्थ पर अगर गौर न किया जाए तो वह बहुत ही जल्दी बीमारियों की चपेट में आने लगते हैं। पेरेंट्स को इस मौसम में बच्चों की डाइट का खास ध्यान रखना चाहिए। इस मौसम में कुछ चीजें बच्चों को देने से उनका स्वास्थ्य बिगड़ने लगता है। तो चलिए आज आपको बताते हैं कि ऐसी कौन सी चीजें हैं जो आपको बच्चों को इस मौसम में नहीं देनी चाहिए...

सॉफ्ट ड्रिंक

इस मौसम में बच्चों को सॉफ्ट ड्रिंक बिल्कुल भी नहीं देनी चाहिए। बारिश के मौसम में इन ड्रिंक्स के सेवन से बच्चों की इम्यूनिटी कमजोर होने लगती है। बरसात में इम्यूनिटी कमजोर होने का मतलब है कि आसानी से सर्दी जुकाम और बुखार से शरीर का घिरना। इसके अलावा सॉफ्ट ड्रिंक पीने से पाचन शक्ति भी प्रभावित होती है जिससे शरीर कई बीमारियों से घिर सकता है।

दही

बरसात के मौसम में दही बच्चों के लिए नुकसानदायक हो सकता है। गर्मियों में तो इसका सेवन करने से पेट संबंधी समस्याओं का बचाव रहता है परंतु मानसून में

इसे बच्चों को देने से उन्हें सर्दी लग सकती है। इसके अलावा यदि आपके बच्चे साइनस का शिकार हैं तो दही खाने से उनका स्वास्थ्य और भी ज्यादा बिगड़ सकता है। ठंडा दही देने की जगह आप बच्चों को सादा दही खाने के लिए दे सकते हैं।

कच्ची सब्जियां

कच्ची सब्जियों बच्चों के लिए इस मौसम में खतरनाक हो सकता है। बरसाती मौसम में सब्जियों पर बैक्टीरिया आसानी से पनपने लगते हैं ऐसे में यदि बच्चे इस मौसम में बिना धोए सब्जियां खाते हैं तो उनके पेट में जर्म्स जा सकते हैं जिसके कारण उनका पेट खराब होने लगता है और उन्हें पाचन संबंधी बीमारियां हो सकती हैं।

फ्राइड फूड

बारिश के दिनों में फ्राइड फूड बच्चों के लिए खतरनाक हो सकता है। एक्सपर्ट्स की मानें तो इसका सेवन करने से पाचन धीमा होने लगता है। खासकर मानसून में बच्चों का पाचन स्वस्थ रहना बहुत ही आवश्यक है ताकि उनकी इम्यूनिटी मजबूत हो सके। अगर बच्चों की इम्यूनिटी कमजोर होगी तो उनकी सेहत पर इसका गलत प्रभाव पड़ेगा। पकौड़े, ब्रेड पकौड़ा और आलू टिक्की जैसी चीजों से बच्चों को बिल्कुल दूर रखें।

स्ट्रीट फूड्स

बरसात में स्ट्रीट फूड्स बच्चों के लिए हानिकारक हो सकता है क्योंकि खुले में होने के कारण इन पर आसानी से कीचड़ जमा होने लगते हैं। यह बैक्टीरिया फूड आइटम्स में भी जा सकते हैं। अगर जर्म्स लगा हुआ स्ट्रीट फूड बच्चे खा लें तो उनकी सेहत खराब हो सकती है।

बरसात में बढ़ सकता है करोना का खतरा, होम्योपैथिक दवाओं से पाएं जबरदस्त सुरक्षा कवच

बरसात ने पूरे देश में दस्तक दे दिया है। प्राकृतिक परिवर्तनों के साथ थोड़ी सी सावधानी और जागरूकता से हम इस सुहाने मौसम का भरपूर लुत्फ उठा सकते हैं। वरना बरसात अपने साथ हरियाली और जल ही नहीं रोगों की भरमार भी लेकर आती है। प्राकृतिक परिवर्तनों से होने वाले सामान्य रोग सर्दी, जुकाम ,खांसी बुखार, मक्खी–मच्छरों से फैलने वाले रोग डायरिया ,पीलिया, डेंगू ,मलेरिया एवं नमी और उमस के कारण उत्पन्न होने वाले फंगल रोग दाद, दिनाय, फोड़ा– फुंसी ,खुजली तथा पैरासाइटिक रोग जैसे अनेक तरह के कृमीजनित संक्रमण, स्केबीज व फाइलेरिया इत्यादि घात लगाए अपनी बारी की तलाश में हैं। बरसात का मौसम सभी को फलने फूलने का अवसर प्रदान करता है। पेड़–पौधे, जीव– जंतु ,कीड़े– मकोड़े मक्खी–मच्छर सबकी प्रजनन और बढ़ावे का सहयोगी मौसम तो होता ही है साथ ही साथ वायरस बैक्टीरिया पैरासाइट्स एवं फंगस भी तेजी से बढ़ते हैं। नदी –नाले भी उफान पर रहते हैं और जलजमाव भी वाटर बार्न रोगों को शरण देने के लिए तत्पर। यहां हम बरसात के कारण होने वाले सर्दी–जुकाम की चर्चा करेंगे।

सर्दी–जुकाम, खांसी–बुखार

बरसात के मौसम में प्रकृति निरंतर परिवर्तनशील बनी रहती है।गर्मी, सर्दी ,सीड़न, उमस एवं तूफानी मौसम का सामना व्यक्ति को एक ही दिन में करना पड़ सकता है। ऐसी अवस्था में इन परिवर्तनों से सबका शरीर सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाता जिससे शरीर का ठंडा या गर्म हो जाना, मुंह ,नाक ,कान ,आंख एवं इंटेस्टाइन के म्यूकस मेंब्रेन का आक्रांत हो जाना सामान्य बात है। जिसके कारण सर्दी जुकाम खांसी बुखार बदन दर्द एवं पेट की गड़बड़ियां उत्पन्न हो सकती हैं। जो कुछ समय बाद स्वयं भी अथवा कुछ सामान्य दवाओं के प्रयोग से ठीक हो सकते हैं। परंतु कोरोना वायरस की भी प्रारंभिक लक्षण यही हैं जो मरीज के भीतर भय और चिकित्सक के अंदर आशंका पैदा कर सकते हैं। ऐसी अवस्था में पेशेंट के अंदर निडरता और डॉक्टर के अंदर सतर्कता का होना जरूरी है।

कारण–––

1–बरसात के समय तापमान में परिवर्तन।

2–आद्रता में परिवर्तन।

3–विभिन्न प्रकार के एलर्जेंट जैसे सीड़न, माइट्स, जलजमाव के कारण आने वाली सड़ांध भरी गंध, विभिन्न प्रकार के फूलों के मकरंद, कीड़े मकोड़े एवं

किताबों और कपड़ों पर नमी के कारण पैदा होने वाले कवक इत्यादि।

4– बरसात के जल में भींगने की असहिष्णुता।

5– इनफ्लुएंजा वायरस।

6– जुकाम पैदा करने वाले सामान्य कोरोना वायरस।

7– गला मुंह नाक और आंख के म्यूकस मेंब्रेन में निवास करने वाले न्यूमोकोकस बैक्टीरिया के एक्टिवेट हो जाने के कारण।

8– रक्त में स्नोफिल की संख्या बढ़ जाने के कारण।

क्या करें क्या ना करें––

वैसे तो कोरोना संक्रमण के कारण आजकल सभी लोग बचाव के अनेक उपाय कर रहे हैं जो वर्षा काल के सर्दी –जुकाम के लिए भी कारगर सिद्ध होंगे। कुछ उपाय निम्नवत हैं–

1– अनावश्यक बारिश में भीगने से बचें। यदि भींग जाते हैं तो जितना जल्दी संभव हो वस्त्रों को बदलकर अच्छी तरह शरीर को पोंछकर सुखा लें।

2– नहाने से पहले पूरे शरीर को सरसों के तेल अथवा ऑलिव ऑयल से मालिश करें।

3– गुनगुने गर्म पानी में नमक डालकर गरारा करें।

4– घर में सीड़न ना होने दें।

5– घर के आस–पास जलजमाव को होने देने से रोकें। हैंडपाइप का पानी उबालकर ठंडा कर के ही पिएं। भरसक फ्रिज का पानी ना पिएं।

6– चाय की जगह तुलसी अदरक काली मिर्च दालचीनी मुलेठी इत्यादि का काढ़ा बनाकर सेवन करें।

7– घर में मकड़ी का जाला न लगने दें।

8–किताबों को समय–समय पर धूप दिखाते रहें।

9– व्यायाम प्राणायाम और योगासनों से अपने को चुस्त दुरुस्त रखें।

10– मौसमी फलों आम, नींबू, आंवला और सुपाच्य भोजन को ही ग्रहण करें।

11– मास्क और सोशल डिस्टेंसिंग इस मौसम के सर्दी जुकाम के लिए भी बहुत कारगर हैं।

12– बहुत लोगों को पार्थेनियम और यूकेलिप्टस जैसे घास और पेड़ों से एलर्जी होती है जो इस मौसम में बढ़ जाती है ।यदि उन्हें पता हो तो इनसे बचकर रहें।

13– सर्दी जुकाम होते ही पहले के दिनों की तरह निश्चिंत ना होकर तुरन्त अपने चिकित्सक की सलाह लें वह आपको सही सलाह और सही औषधि दे पाएगा। अनावश्यक घबराए ना जिससे आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमता बनी रहेगी। ऐसा करना इस कोरोना कॉल में अत्यंत आवश्यक है।

होम्योपैथी बचाव और चिकित्सा–

होम्योपैथी में सर्दी जुकाम खांसी बुखार की अनेकानेक आराम देने वाली औषधियां उपलब्ध हैं ,जो रोग होने के पूर्व और बाद सफलतापूर्वक प्रयोग की जा सकती हैं।

बचाव–

1– मौसम के प्रारंभ में ही एक खुराक इनफ्लूएंजिनम 200 एवं 2 दिन बाद आर्सेनिक अल्ब 200 की एक खुराक लेकर सर्दी जुकाम से बचा जा सकता है।

2– यदि किसी को दूरस्थ बादलों के आगमन की सुगबुगाहट से ही जुकाम हो जाता हो तो डल्कामारा 200 की कुछ खुराकें हीं उसके बचाव के लिए काफी हैं।

3– यदि किसी को भींग जाने के कारण यह शिकायत हो रही हो तो सीजन के प्रारंभ में ही एवं एक दो बार बीच में भी रस टॉक्स 1ड. की एक खुराक ले लेनी चाहिए।

4– घर में सीलन और आसपास जलजमाव के कारण होने वाले जुकाम खांसी बुखार से बचाव के लिए नेट्रम सल्फ 200 कि एक खुराक 15 दिन पर एक बार कारगर सिद्ध होगी।

5– यदि स्टॉर्मी वेदर के कारण ऐसा कुछ हो रहा हो तो रोडोडेंड्रान 1डकी एक खुराक प्रत्येक 15 दिन पर बहुत ही फायदेमंद होगी।

6– मकड़ी के जालों नम किताबों पटनी और सेल्फ पर बैठी धूल से एलर्जी होने पर अंब्रोसिया ए10डकी कुछ खुराकें सदा के लिए मुक्ति दिला सकती हैं ।

7– पार्थेनियम की एलर्जी को ऐंटीपायरिन 200 के प्रयोग से खत्म किया जा सकता है।

8– इस्नोफीलिया की वजह से यदि सर्दी जुकाम खांसी हो तो एड्रीनलिन 1ड रोज सुबह दोपहर शाम लेने पर दो–तीन दिन में ही आराम हो जाता है। इस्नोफिल भी सामान्य अवस्था में पहुंच जाती है।

सर्दी जुकाम खांसी हो जाने पर–लक्षणानुसार एकोनाइट ,आर्सेनिक एल्बम ,रस टॉक्स ,डल्कामारा नेट्रम सल्फ, रोडोडेंड्रान , यूपेटोरियम पर्फोरेटम, अमोनियम कार्ब , हिपरसल्फ ,नक्स वॉमिका इत्यादि होम्योपैथिक दवाएं अत्यंत कारगर हैं।

(बचाव अथवा चिकित्सा वाली उपरोक्त दवाएं होम्योपैथिक चिकित्सक की सलाह पर ही ली जानी चाहिए)।

झुर्रियों से लेकर एक्ने दूर करेंगे कॉफी आइसक्यूब, चेहरे पर लगाने से होगें ढेरों फायदे

धूल–मिट्टी और बढ़ते प्रदूषण के कारण महिलाएं कई तरह की स्किन समस्याओं से जूझ रही हैं। समय से पहले चेहरे पर झुर्रियां आना, पिपंल्स आना इनमें से एक आम समस्या है। ऐसे में इससे बचने के लिए वह कई तरह के ब्यूटी प्रोडक्ट्स भी इस्तेमाल करती हैं लेकिन समस्या से राहत नहीं मिल पाती। स्किन प्रॉब्लम्स दूर करने के लिए आप कॉफी से बने आइसक्यूब्स इस्तेमाल कर सकती हैं। तो चलिए आपको बताते हैं कि आप चेहरे पर इनका कैसे इस्तेमाल कर सकते हैं...

त्वचा होगी टाइट

कॉफी को स्किन पर लगाने से रक्त प्रवाह ठीक होता है। इससे आपकी स्किन भी नैचुरली तरीके से टाइट होती है। कॉफी से बने आइसक्यूब आंखों की सूजन भी दूर करते हैं।

सनटैन से होगा बचाव

कॉफी में एंटीऑक्सीडेंट्स मौजूद होते हैं जो त्वचा के लिए काफी फायदेमंद माने जाते हैं। यह आपकी स्किन को यूवी किरणों से बचाने में मदद करते हैं। इसके अलावा इनके इस्तेमाल से आपकी त्वचा भी सनटैन से बची रहेगी और इसको ठंडक भी मिलेगी।

खुलेंगे त्वचा के रोमछिद्र

इन्हें चेहरे पर लगाने से मुंहासे भी दूर होते हैं। चेहरे पर कॉफी से बने आइसक्यूब्स लगाने से त्वचा की डेड स्किन भी निकलती है।

ऑयली स्किन से मिलेगी राहत

गर्मी में अगर आपकी स्किन ऑयली होती है तो कॉफी से बने आइसक्यूब्स काफी फायदेमंद हो सकते हैं। यह त्वचा पर ऑयल का उत्पादन करने वाले सीबम को कंट्रोल करने में मदद करेंगे।

कैसे बनाएं कॉफी आइसक्यूब्स?

. सबसे पहले एक पैन में 1 गिलास गर्म पानी कर लें।

. इसके बाद इसमें 2 चम्मच स्ट्रॉन्ग कॉफी डालें और 1 मिनट के लिए उबाल लें।

. फिर इसमें 1/2 चम्मच शहद डालें और ठंडा होने के लिए रख दें।

. जैसे मिश्रण ठंडा हो जाए तो उसे आइस क्यूब्स ट्रे में डालकर फ्रीजर में रख दें।

. 4–5 घंटे के बाद निकालें आपके आइस क्यूब्स तैयार हो जाएंगे।

चेहरे पर लगाने का तरीका

. सबसे पहले चेहरा अच्छे से धो लें।

. इसके बाद त्वचा को टॉवल से सुखाएं।

. फिर एक कॉटन के कपड़े में आइसक्यूब्स लपेट लें।

. इसके बाद कपड़े के साथ 5–10 मिनट के लिए चेहरे पर इनकी मसाज करें।

. जैसे यह आइसक्यूब्स के साथ मसाज पूरी हो जाए तो चेहरा ऐसे ही छोड़ दें।

. बाद में नॉर्मल पानी के साथ चेहरा धो लें।

घर में बनाएं कैफे जैसी क्रीमी और टेस्टी कोल्ड कॉफी, नोट करें आसान रेसिपी

गर्मी के मौसम ने दस्तक दे दी है। ऐसे मौसम में तरह–तरह की कोल्ड ड्रिंक्स पीने का मन करता है। घर पर भी रोजाना लस्सी और शरबत जैसी चीजें बनती हैं, लेकिन अगर आप इन सब ड्रिंक्स स बोर हो गए हैं और कुछ नया ट्राई करना चाहते हैं तो कोल्ड कॉफी बना सकती हैं। इसका स्वाद बच्चों से लेकर बड़ों तक सबको बहुत पसंद आएगा। इसके लिए आपको कैफे जाने की जरूरत नहीं है। बस घर पर ही आप इसके बहुत आसानी से बना सकते हैं। आइए आपको बताते हैं इसकी रेसिपी....

सामग्री

कॉफी पाउडर– 4 बड़ी चम्मच

फुल क्रीम दूध– 4 कप

चीनी (पीसी हुई)– 3/4 कप

चॉकलेट सिरप (चॉकलेट को मेल्ट करके भी इस्तेमाल कर सकते हैं)

कोल्ड कॉफी बनाने की विधि

1. सबसे पहले एक ग्लास में चॉकलेट सिरप डालकर उसे फ्रिज में रख दें।

2. अब एक कप में 2 बड़े चम्मच गुनगुना पानी लें। इसमें कॉफी डालकर अच्छी तरह से मिला लें।

3,. अब दूध, पानी में फेंटी हुई कॉफी, चीनी और आइसक्यूब्स को लेकर मिक्सर में डालकर चला लें।

4. झाग होने तक मिक्सी चलाते रहें।

5. अब फ्रिज से ग्लास निकालकर इसमें कोल्ड कॉफी डल लें। चाहें तो ऊपर से और चॉकलेट सिरप डाल लें।

6. आपकी कोल्ड कॉफी तैयार है।

संक्षिप्त

जून में 17 महीने के निचले स्तर पर आई सर्विस सेक्टर की ग्रोथ

नई दिल्ली,एजेंसी। भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ माने जाने वाले सर्विस सेक्टर (सेवा क्षेत्र) की रफ्तार जून 2026 में सुस्त पड़ गई है। कमजोर घरेलू मांग और ग्राहकों की घटती दिलचस्पी के कारण जून में देश की सर्विस सेक्टर ग्रोथ 17 महीने के निचले स्तर पर आ गई है। एचएसबीसी के ताजा सर्वे के मुताबिक, बाजार की चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों ने न केवल नई सेल और उत्पादन पर ब्रेक लगाया है, बल्कि इसके कारण कंपनियों का कारोबारी भरोसा भी पांच महीने के निचले स्तर पर पहुंच गया है और नई भर्तियों पर अस्थायी रोक लग गई है। सीजनली एडजस्टेड श्एचएसबीसी इंडिया सर्विसेज पीएमआई बिजनेस एक्टिविटी इंडेक्सश (सर्विसेज पीएमआई) जून में गिरकर 57.4 पर आ गया है, जो मई में 59.8 पर था। हालांकि, यह आंकड़ा अभी भी 50.0 की तटस्थ सीमा से ऊपर है, जो ग्रोथ को दर्शाता है, लेकिन यह पिछले 17 महीनों में सबसे कमजोर बढ़ोतरी है। एचएसबीसी की मुख्य भारतीय अर्थशास्त्री प्रांजल भंडारी के अनुसार, इस गति के धीमे होने का मुख्य कारण चुनौतीपूर्ण बाजार स्थितियां और विशेष रूप से घरेलू स्तर पर कमजोर मांग है। इसके कारण नए ऑर्डर्स मिलने की रफ्तार पिछले ढाई वर्षों में सबसे धीमी दर्ज की गई है। घरेलू मांग में सुस्ती के बीच एक राहत की खबर निर्यात (एक्सपोर्ट) मोर्चे से आई है। जून के दौरान सेवा प्रदाता कंपनियों को विदेशों से मिलने वाले ऑर्डर्स में पिछले तीन महीनों की सबसे तेज बढ़त देखने को मिली है। सर्वे के अनुसार, ऑस्ट्रेलिया, बेल्जियम, कनाडा, जर्मनी, मलेशिया, नेपाल, ओमान, कतर, सिंगापुर, यूएई (संयुक्त अरब अमीरात) और अमेरिका जैसे वैश्विक देशों से भारतीय सेवाओं की मांग में मजबूत सुधार दर्ज किया गया है। बाहरी मांग के इस मजबूत सहारे ने कुल गिरावट को काफी हद तक थामने का काम किया है। कमजोर मांग के चलते एक सकारात्मक पहलू यह रहा कि कीमतों के मोर्चे पर दबाव काफी कम हुआ है। इनपुट कॉस्ट (लागत) और आउटपुट चार्ज (बिक्री मूल्य) दोनों की मुद्रास्फीति दर में नरमी आई है। नवंबर 2025 के बाद से मूल्य वृद्धि की यह दर सबसे कमजोर रही है। विशेषज्ञों का मानना है कि पश्चिम एशिया में भू–राजनीतिक तनाव कम होने से कंपनियों की लागत में यह कमी आई है। वहीं दूसरी ओर, नए काम की धीमी रफ्तार के कारण कंपनियों ने नई भर्तियां रोक दी हैं। कंपनियों का मानना है कि मौजूदा कर्मचारी वर्तमान काम के लिए पर्याप्त हैं, जिससे रोजगार सृजन की रफ्तार धीमी हुई है। सिर्फ सर्विस सेक्टर ही नहीं, बल्कि विनिर्माण (मैन्युफैक्चरिंग) और सेवाओं को मिलाकर तैयार होने वाला एचएसबीसी इंडिया कंपोजिट पीएमआई आउटपुट इंडेक्स भी मई के 59.3 से गिरकर जून में 57.1 पर आ गया है। यह गिरावट भारतीय निजी क्षेत्र में व्यापक स्तर पर आई सुस्ती को दर्शाती है, जहां नए ऑर्डर और रोजगार सृजन की दर 2026 में अब तक के सबसे निचले स्तर पर पहुंच गई है। यद्यपि आगामी 12 महीनों के लिए कंपनियां उत्पादन वृद्धि को लेकर आशान्वित हैं, लेकिन उनके सकारात्मक रुख का ग्राफ पांच महीने के निचले स्तर पर आ गया है।

क्या फर्जी वेबसाइटों पर भारत की सख्ती इंटरनेट को बना देगी असुरक्षित?

नई दिल्ली,एजेंसी। स्मार्टफोन और इंटरनेट के बढ़ते प्रसार के साथ भारत में साइबर धोखाधड़ी तेजी से बढ़ी है, जहां पिछले साल करीब 2.4 अरब डॉलर से जुड़ी 24 लाख शिकायतें दर्ज हुईं। इस समस्या से निपटने के लिए एक अदालती आदेश के जरिए इंटरनेट संचालन (गवर्नेंस) के स्थापित नियमों को बदल दिया है। हालांकि, दुनिया के सबसे बड़े डोमेन विक्रेता गोडैडी ने आशंका जाहिर की है कि फर्जी वेबसाइटों पर इस कड़े प्रहार से वैध व्यवसाय असुरक्षित हो सकते हैं और इसके गंभीर वैश्विक परिणाम होंगे। यह विवाद अमेजन, मैकडॉनल्ड्स, माइक्रोसॉफ्ट, श्याओमी जैसी 20 से अधिक कंपनियों की ओर से दायर याचिकाओं के बाद शुरू हुआ, जिनकी नकल कर फर्जी वेबसाइटें बड़े पैमाने पर धोखाधड़ी कर रही थीं। इसके बाद अदालत ने दिसंबर में 1,100 से अधिक फर्जी वेबसाइटों को ब्लॉक कर दिया। अमेरिका स्थित गोडैडी ने इन निर्देशों को दिल्ली उच्च न्यायालय की बड़ी पीठ के सामने चुनौती दी है। कंपनी का तर्क है कि डिफॉल्ट गोपनीयता खत्म करने से वैध वेबसाइट मालिकों के नाम, पते, फोन नंबर और ईमेल सार्वजनिक हो जाएंगे, जिससे उन्हें उत्पीड़न और सुरक्षा जोखिमों का सामना करना पड़ेगा। विशेषज्ञों का भी मानना है कि इससे केवल वैध उपयोगकर्ता जैसे पत्रकार या छोटे व्यवसायी प्रभावित होंगे, असली जालसाज नहीं। गोडैडी का यह भी तर्क है कि मात्र 72 घंटों में श्वैध हितश की पहचान करना उसके सामर्थ्य के बाहर है। कंपनी ने अपने 5,121 पन्नों के अपील दस्तावेज में इन निर्देशों को व्यावसायिक रूप से अस्थिर करने वाला बताते हुए चेतावनी दी है कि यह उन्हें भारत से कारोबार समेटने पर मजबूर कर सकता है। नेमचीप और होस्टिंग कॉन्सेप्ट्स जैसी गोडैडी की प्रतिद्वंद्वी कंपनियों ने भी इस आदेश को चुनौती दी है। गोडैडी के अनुसार, ब्रांड नामों के हर अल्फान्यूमेरिक वेरिएशन को रोकना असंभव है। उदाहरण के लिए, मैकडॉनल्ड्स मूल रूप से एक लोकप्रिय स्कॉटिश नाम है जिसका अर्थ दुनिया के शासक का पुत्र होता है। इस पर पूरी तरह रोक लगाने से एक सामान्य भाषाई नाम पर एकाधिकार बन जाएगा। यूनिलीवर के ट्रेडमार्क एचयूएल के संरक्षण से शीनसाश या श्उवहीनसश जैसे अंग्रेजी के कम से कम 118 शब्द प्रभावित होंगे। गोडैडी का कहना है कि ट्रेडमार्क के टकराव के बिना अंग्रेजी का कोई नया डोमेन पंजीकृत करना लगभग असंभव हो जाएगा। भारत के गृह मंत्री अमित शाह के अनुसार, देश में हर 37 सेकंड में एक व्यक्ति साइबर अपराध का शिकार होता है, जिससे यह एक राष्ट्रीय संकट बन सकता है। गृह मंत्रालय और आईटी मंत्रालय दोनों ही त्वरित जांच के लिए डोमेन पंजीकरण विवरण को आसानी से उपलब्ध कराने और वेरिफिकेशन को कड़ा करने के पक्ष में हैं।

वैभव को कब मिलेगा मौका? डिविलियर्स ने भारतीय टीम के फैसले पर उठाए सवाल

केप टाउन,एजेंसी। दक्षिण अफ्रीका के पूर्व कप्तान एबी डिविलियर्स ने 15 वर्षीय वैभव सूर्यवंशी को लगातार प्लेइंग–11 से बाहर रखने के फैसले पर सवाल उठाए हैं। उनका मानना है कि आईपीएल 2026 में शानदार प्रदर्शन करने वाले इस युवा बल्लेबाज को आयरलैंड दौरे पर ही अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में मौका मिल जाना चाहिए था। वैभव को आयरलैंड और इंग्लैंड दौरे के लिए टीम इंडिया में शामिल किया गया था, लेकिन अब तक वह सिर्फ बेंच पर बैठे नजर आए हैं। आयरलैंड के खिलाफ दोनों टी20 और इंग्लैंड के खिलाफ पहले टी20 में भी उन्हें अंतिम एकादश में जगह नहीं मिली। अपने यूट्यूब चौनल पर डिविलियर्स ने टीम मैनेजमेंट के फैसले पर असहमति जताते हुए कहा, श्आखिर वैभव सूर्यवंशी को कब मौका मिलेगा? मुझे लगा था कि आयरलैंड सीरीज उनके लिए अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट का अनुभव लेने का सबसे अच्छा अवसर थी। दुर्भाग्य से उन्हें एक भी मैच खेलने का मौका नहीं मिला।

उन्होंने आगे कहा, मैं रेयान टेन डेशकाटे की इस बात से सहमत नहीं हूं कि सूर्यवंशी को भी दूसरे खिलाड़ियों की तरह पूरी प्रक्रिया से गुजरना चाहिए। आईपीएल में जिस तरह का प्रदर्शन उन्होंने किया, उसके बाद समय आ गया था कि उन्हें सीधे चुनौतीपूर्ण माहौल में उतारा जाए, खासकर आयरलैंड जैसी टीम के खिलाफ। आयरलैंड सीरीज के दौरान भारत के सहायक कोच रयान टेन डोशेट ने कहा था कि वैभव को अपने मौके का इंतजार करना होगा। उनके मुताबिक टीम मैनेजमेंट संजू सैमसन के साथ निष्पक्ष रहना चाहता था, क्योंकि उन्होंने इसी साल भारत को टी20 विश्व कप जिताने में अहम भूमिका निभाई थी। हालांकि अब संजू सैमसन लगातार तीन पारियों में बड़ी पारी खेलने में नाकाम रहे हैं, जिससे वैभव को मौका देने की मांग तेज हो गई है। वैभव सूर्यवंशी ने आईपीएल 2026 में राजस्थान रॉयल्स के लिए शानदार प्रदर्शन करते हुए 776 रन बनाए थे। इसके बाद उन्होंने लिस्ट–ए क्रिकेट में सबसे तेज अर्धशतक जड़कर भी सुर्खियां बटोरी थीं। यही वजह है कि क्रिकेट विशेषज्ञ लगातार उन्हें टीम इंडिया की प्लेइंग इलेवन में शामिल करने की मांग कर रहे हैं। डिविलियर्स ने भारत की हालिया फॉर्म पर भी चिंता जताई। उन्होंने कहा, श्टीम इंडिया को अभी काफी काम करने की जरूरत है। उसे फिर से खुद को संभालना होगा और ब्रिटेन की परिस्थितियों के अनुसार अपनी रणनीति तैयार करनी होगी। वहां बल्लेबाजी आईपीएल जैसी नहीं होती। हर मैच में 250 या 260 रन नहीं बनते। कई बार 140 या 160 रन का स्कोर भी जीत के लिए काफी होता है।श भारत को हाल ही में आयरलैंड के खिलाफ दो मैचों की टी20 सीरीज में 0–2 से हार का सामना करना पड़ा था। वहीं, इंग्लैंड के खिलाफ पहला टी20 बारिश के कारण रद्द हो गया। अब दोनों टीमें 4 जुलाई को मैनचेस्टर में दूसरे टी20 में आमने–सामने होंगी।

मैदान पर विरोधियों की नींद उड़ाने वाले हालंद, इसाबेल के प्यार में कैसे पिघले ?

न्यूयॉर्क,एजेंसी। फीफा विश्व कप 2026 में नॉर्वे के स्टार स्ट्राइकर एरलिंग हालंद अपनी टीम की सबसे बड़ी उम्मीद बने हुए हैं। गोल मशीन के नाम से मशहूर हालंद एक बार फिर अपनी फिनिशिंग से विरोधी टीमों के लिए खतरा साबित हो रहे हैं। वह अब तक इस विश्वकप में पांच गोल दाग चुके हैं, लेकिन मैदान के बाहर भी उनकी एक ऐसी कहानी है, जो किसी फिल्मी स्क्रिप्ट से कम नहीं। बचपन की दोस्ती, पहला मैसेज, फुटबॉल, एक गेम और फिर माता–पिता बनने तक शुरुआत दोस्ती से हुई, लेकिन जब हालंद जर्मन क्लब बोरूसिया डॉर्टमुंड के लिए खेलने लगे, तब दोनों के रिश्ते ने नया मोड़ लिया और दोस्ती प्यार में बदल गई। हालंद ने एक इंटरव्यू में अपनी लव स्टोरी का दिलचस्प राज भी खोला था। उन्होंने बताया कि रिश्ते की शुरुआत उन्होंने नहीं, बल्कि इसाबेल ने की थी। हालंद ने कहा, उसने मुझे सबसे पहले मैसेज किया था। वह भी ब्रायने क्लब में खेलती थी। उसी ने सबसे पहले मुझमें दिलचस्पी दिखाई थी। मैंने नहीं। उन्होंने कहा, श्मैं खाना बनाता हूं। शायद यह बात उसे थोड़ी शर्मिंदा करे, लेकिन उसे गेम खेलना पसंद है। हम दोनों साथ में माइनक्राफ्ट खेलते हैं। घर बनाते हैं और खूब मजे करते हैं। कभी–कभी हम ब्रायने लौटकर साथ में कबाब भी खाते हैं। हालंद पहले भी कई बार बता चुके हैं कि माइनक्राफ्ट उनका पसंदीदा वीडियो गेम है, जबकि कबाब उनका सबसे पसंदीदा खाना है, हालांकि फिटनेस की वजह से वह इसे कम ही खा पाते हैं। इसाबेल का जन्म जुलाई 2004 में नॉर्वे के ब्रायने में हुआ था। उन्होंने ब्रायने एफके की महिला टीम से सिर्फ 13 साल की उम्र में डेब्यू किया था। अपने करियर में उन्होंने 36 मैचों में 23 गोल किए। फुटबॉल के अलावा वह फैशन इंडस्ट्री से भी जुड़ी हुई हैं और सोशल मीडिया पर भी काफी लोकप्रिय हैं। इंस्टाग्राम पर उनके लाखों फॉलोअर्स हैं, जहां वह अपनी यात्रा, परिवार और छुट्टियों की तस्वीरें साझा करती रहती हैं। साल 2024 के आखिर में हालंद और इसाबेल पहली बार माता–पिता बने। दोनों ने अपने बेटे का स्वागत किया, हालांकि अब तक उन्होंने बेटे का नाम सार्वजनिक नहीं किया है। हालंद ने प्रेग्नेंसी की जानकारी भी बेहद अनोखे अंदाज में दी थी। नॉर्वे के लिए गोल करने के बाद उन्होंने गेंद को अपनी टी–शर्ट के अंदर रखकर जश्न मनाया था। बाद में मैनचेस्टर सिटी के तत्कालीन मैनेजर पेप गार्डियोला ने भी पुष्टि की कि हालंद पहली बार पिता बने हैं। माता–पिता बनने के बाद दोनों इटली के रोम में छुट्टियां मनाते नजर आए। इस दौरान उन्होंने डोल्से एंड गब्बाना के फैशन शो में भी हिस्सा लिया। हालंद ने सोशल मीडिया पर रोम की तारीफ करते हुए लिखा, श्रोम उन सबसे खूबसूरत शहरों में से एक है, जहां मैं गया हूं। यहां का खाना शानदार है। मैं इटली से प्यार करता हूं। हालंद और इसाबेल की प्रेम कहानी किसी बड़े फिल्मी ड्रामे की नहीं, बल्कि दोस्ती, भरोसे और साथ की कहानी है। बचपन में एक ही फुटबॉल अकादमी से शुरुआत करने वाले दोनों आज दुनिया के सबसे चर्चित युवा कपल्स में गिने जाते हैं। हालंद मैदान पर गोल दाग रहे हैं, जबकि मैदान के बाहर इसाबेल हर कदम पर उनके साथ मजबूती से खड़ी नजर आती हैं। इस विश्वकप में इसाबेल हर मैच में हालंद को सपोर्ट करने पहुंची हैं। मैच के बाद दोनों ने साथ में तस्वीरें भी खिंचवाई हैं। अब नॉर्वे का राउंड ऑफ–16 में ब्राजील से सामना होगा और हालंद से उस मैच में काफी उम्मीदें हैं।

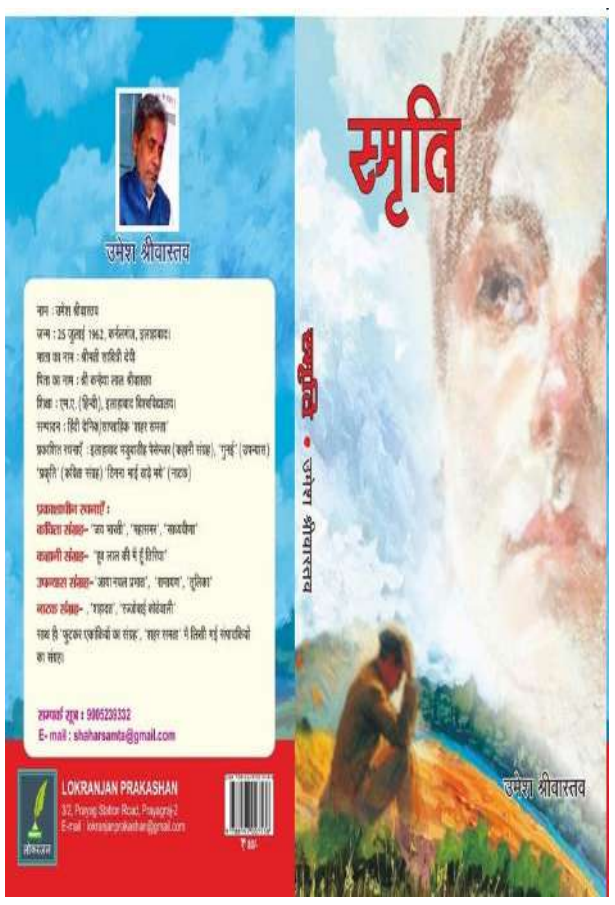

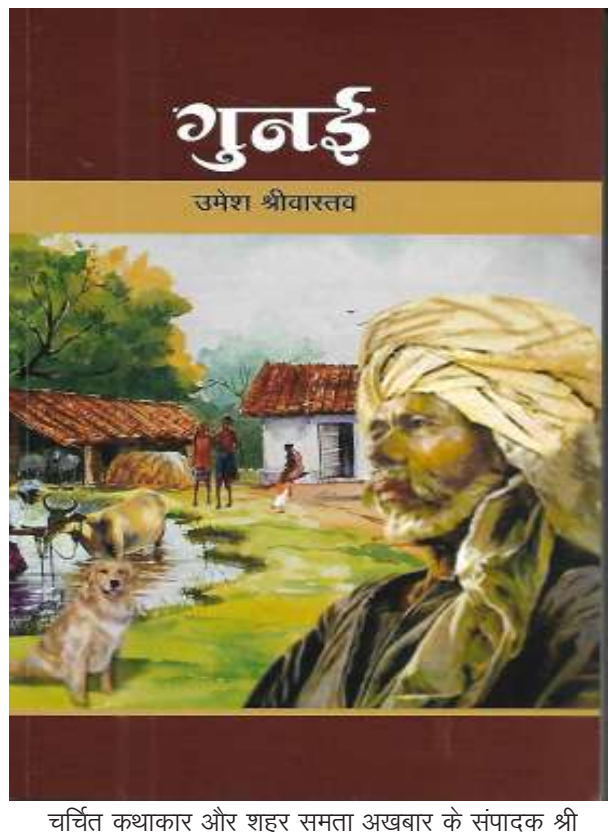

चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित

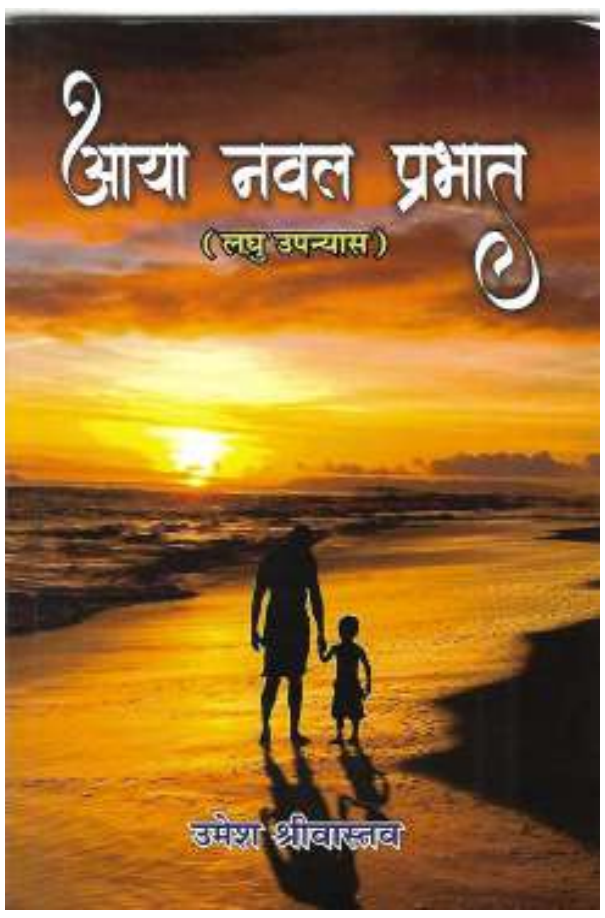

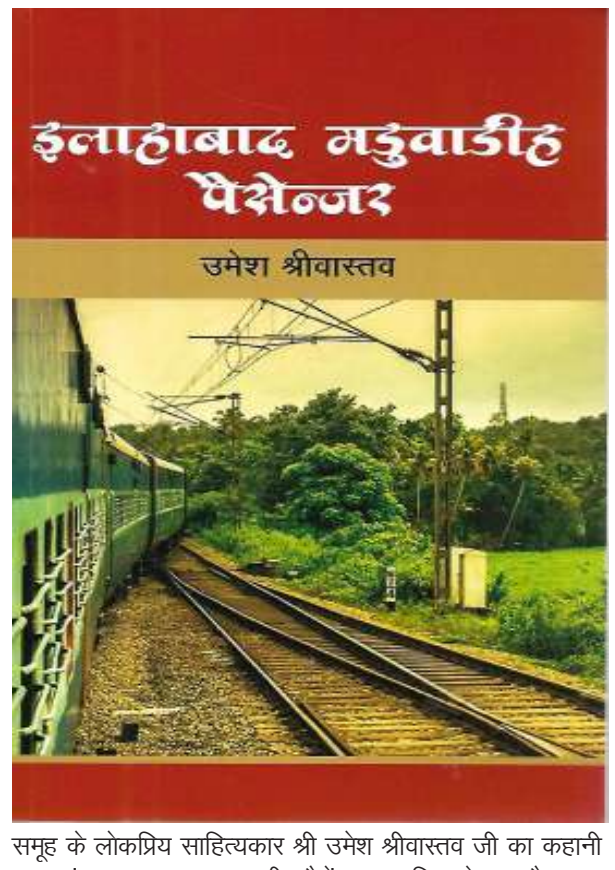

समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना।

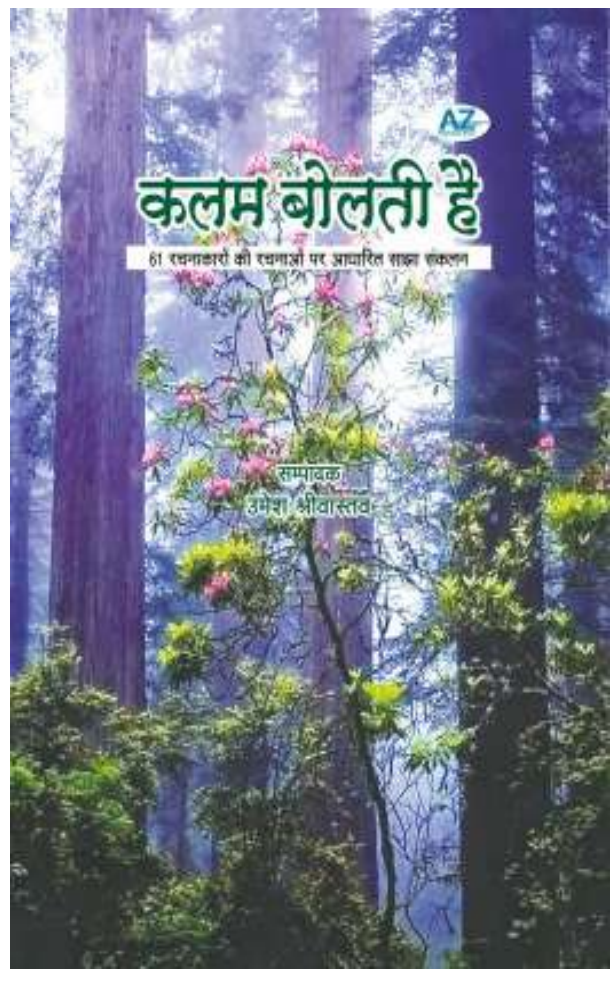

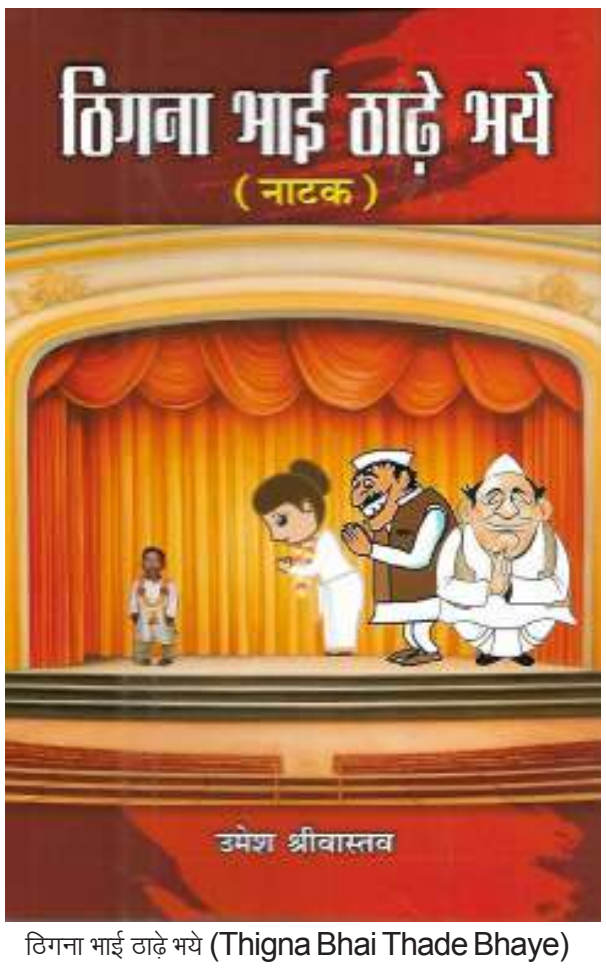

ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

संक्षिप्त

पाकिस्तान में बड़ा हादसा, यात्रियों से भरी बस खाई में गिरी, 40 लोगों की दर्दनाक मौत

इस्लामाबाद, एजेंसी। उत्तर–पश्चिम पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में शुक्रवार को यात्रियों से भरी एक बस गहरी खाई में गिर गई। इस हादसे में महिलाओं और बच्चों समेत कम से कम 40 लोगों की मौत हो गई। अधिकारियों के अनुसार, पेशावर जा रही बस बलूचिस्तान के शेरानी जिले को पार करने के बाद खैबर पख्तूनख्वा के डेरा इस्माइल खान जिले में प्रवेश कर रही थी। इसी दौरान यह हादसा हुआ। बस के ब्रेक फेल होने से हादसा होने की आशंका हादसे में आठ लोगों को सुरक्षित निकाल लिया गया है। उन्हें उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। प्रारंभिक आशंका है कि बस के ब्रेक फेल हो गए थे। पहाड़ी क्षेत्र में एक तीखे मोड़ से गुजरते समय चालक बस पर नियंत्रण खो बैठा, जिसके बाद बस सड़क से फिसलकर गहरी खाई में जा गिरी। हालांकि, अधिकारियों का कहना है कि हादसे के वास्तविक कारणों का पता लगाने के लिए जांच शुरू कर दी गई है। खैबर पख्तूनख्वा के पहाड़ी इलाकों में सड़क दुर्घटनाएं आम हैं और अक्सर जानलेवा साबित होती हैं। इसकी प्रमुख वजह दुर्गम भौगोलिक परिस्थितियां, प्रतिकूल मौसम और यातायात नियमों का लगातार उल्लंघन माना जाता है।

ट्रंप का सनसनीखेज दावा- 3 दिन तक ईरान पर किया हमला, रडार बार-बार किया तबाह

वॉशिगंटन, एजेंसी। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने गुरुवार को दावा किया कि वाणिज्यिक जहाजों पर ईरानी हमले के जवाब में अमेरिकी सेना ने लगातार तीन रातों तक ईरान पर हमले किए थे। उन्होंने दावा किया कि अमेरिका ने बार–बार ईरान के रडार सिस्टम को तबाह किया और वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए होर्मुज से वाणिज्यिक तेल टैंकरों को सुरक्षित निकाला। सीएनबीसी के साथ एक इंटरव्यू में ट्रंप ने कहा, श्हमने ईरान के रडार को ध्वस्त कर दिया। उनके पास कोई रडार नहीं था और अभी भी नहीं है। उनके पास एक बढ़िया नया रडार आया था, लेकिन बीते सप्ताह उसे भी हमने ध्वस्त कर दिया।श जब ट्रंप से आगे भी ईरान पर कार्रवाई करने को लेकर सवाल किया गया तो उन्होंने साफ इनकार नहीं किया और कहा कि हमारे पास सभी संसाधन मौजूद हैं। ट्रंप ने होर्मुज में ईरान की नाकेबंदी को लोहे की दीवार बताया। उन्होंने कहा, श्मैंने जो नाकेबंदी की, वह असल में नाकेबंदी नहीं बल्कि लोहे की दीवार थी। हमारे पास महान नौसेना है। ये लोग अविश्वसनीय हैं। एक भी जहाज ईरान तक नहीं पहुंच पाया। ट्रंप ने कहा कि अमेरिका के हमले के बाद ईरान की अर्थव्यवस्था बुरी तरह कमजोर हो गई है। वहां 300 फीसदी तक महंगाई बढ़ गई है और वे कोई कमाई नहीं कर पा रहे हैं। उन्होंने कहा, श्ईरान की सेना गायब हो चुकी है। उनके नेता गायब हो चुके हैं। दूसरे दर्जे के नेता भी मारे जा चुके हैं। और तीसरे दर्जे के नेताओं में शे भी कुछ मारे गए हैं।श ट्रंप ने कहा कि श्ईरान को भोजन की जरूरत है। उन्हें मक्का, गेहूं और सोयाबीन की जरूरत है। हम इसकी आपूर्ति करेंगे। बशर्ते हम उस स्थिति में पहुंच जाएं, जहां हमें पहुंचना चाहिए। ट्रंप ने कहा कि श्अगर हम होर्मुज जलडमरूमध्य को बंद कर देते तो दुनिया में तेल की कीमतें 350 अमेरिकी डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच जातीं और दुनिया में मंदी आ जाती। इसके बजाय अमेरिकी नौसेना ने चुपचाप जलडमरूमध्य से टैंकरों को सुरक्षित निकाला। एक रात ऐसी भी थी, जब हमने 22 जहाजों को बाहर निकाला और किसी को पता भी नहीं चला।

'बाहरी लोग खुद की भी सुरक्षा नहीं कर सकते', CENTCOM की बैठक पर ईरानी विदेश मंत्री ने क्या कहा?

तेहरान, एजेंसी। अमेरिकी सेंट्रल कमांड (CENTCOM) ने बहरीन में एक बड़ी क्षेत्रीय सुरक्षा बैठक बुलाई। इसमें 12 देशों के सैन्य नेता शामिल हुए। इस सम्मेलन में सीरिया और लेबनान की भागीदारी ने सबको चौंका दिया। बहरीन रक्षा बल ने इस शिखर सम्मेलन की मेजबानी की। इसका मुख्य मकसद मध्य पूर्व में हवाई सुरक्षा को मजबूत करना और समुद्री व्यापारिक रास्तों को सुरक्षित बनाना था। ईरान ने जताया कड़ा विरोध ईरान ने इस अमेरिकी पहल की कड़ी निंदा की है। ईरान के विदेश मंत्री सैयद अब्बास अराघची ने कहा कि पश्चिमी देशों का हस्तक्षेप इस क्षेत्र में स्थिरता नहीं ला सकता। उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा कि स्थायी शांति केवल आपसी सहयोग से आ सकती है, पेंटागन के साये में नहीं। अराघची ने सवाल उठाया कि क्या CENTCOM ने इस क्षेत्र में सुरक्षा दी है या असुरक्षा? उन्होंने कहा कि ईरान की सेना ने साबित किया है कि बाहरी लोग खुद की रक्षा भी नहीं कर सकते। उनके अनुसार, बिना किसी बाहरी हस्तक्षेप के ही शांति संभव है। होर्मुज पर ईरान का दावा ईरान के उप विदेश मंत्री काजेम गरीबाबादी ने भी इस बैठक पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि फारस की खाड़ी और होर्मुज जलडमरूमध्य में सुरक्षा के नियम तय करने का अधिकार अमेरिका को नहीं है। गरीबाबादी ने स्पष्ट किया कि होर्मुज का रास्ता ईरान के कमांड में आता है, ब्मछज्ब्ड के नहीं।

आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश राज्य के प्रयागराज जिले से प्रकाशित समाचार पत्र को समस्त जनपदों में एवम तहसील व ब्लॉक/शहर में ब्यूरो प्रमुख, चीफ रिपोर्टर, संवाददाता, प्रतिनिधि मण्डल की अवश्यकता है जिन्हे आकर्षण वेतन और भत्ते आदि सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

सम्पर्क सूत्र
शहर समता हिन्दी दैनिक/साप्ताहिक समाचार पत्र
मोबाईल नम्बर 9190052 39332
.919450482227

पाकिस्तान से लौटते समय इस्राइल के निशाने पर थे ईरानी वार्ताकार, अमेरिका ने कैसे बचाई दोनों की जान ?

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका और इस्राइल के रिश्ते भले ही बेहद करीबी माने जाते हों, लेकिन ईरान युद्ध के दौरान दोनों देशों की रणनीति हर मोर्चे पर एक जैसी नहीं थी। एक नई रिपोर्ट में दावा किया गया है कि अमेरिका ने मध्य पूर्व में अपने सहयोगी देशों के जरिए ईरान को इस्राइल की एक कथित हत्या की साजिश के बारे में आगाह किया था। दावा है कि इस्राइल युद्धविराम वार्ता में शामिल ईरान के दो प्रमुख नेताओं को निशाना बना सकता था। अमेरिका को आशंका थी कि ऐसा होने पर युद्धविराम की पूरी प्रक्रिया टूट जाएगी और क्षेत्र एक बार फिर बड़े युद्ध की चपेट में आ जाएगा। रिपोर्ट के अनुसार, ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराघची और संसद अध्यक्ष मोहम्मद बाघेर गालीबाफ युद्धविराम और आगे की वार्ता में सबसे अहम भूमिका निभा रहे थे। यही दोनों नेता अमेरिका, कतर, पाकिस्तान और क्षेत्र के अन्य देशों के साथ बातचीत कर रहे थे। इन चर्चाओं का मकसद होर्मुज जलडमरूमध्य को फिर से खोलना और ईरान के परमाणु कार्यक्रम पर आगे की बातचीत का ढांचा तैयार करना था। ऐसे में अमेरिका नहीं चाहता था कि वार्ता के बीच इन नेताओं पर कोई हमला हो और पूरी कूटनीतिक प्रक्रिया पटरी से उतर जाए।

क्या थी अमेरिका की सबसे बड़ी चिंता? रिपोर्ट में कहा गया है कि अमेरिका को जानकारी मिली थी कि इस्राइल ने गालीबाफ और अराघची को संभावित निशानों की सूची में रखा है। ट्रंप प्रशासन का मानना था कि अगर इन दोनों नेताओं की हत्या होती है तो ईरान के साथ किसी भी तरह के शांति प्रयास खत्म हो जाएंगे। इसी वजह से अमेरिका ने अपने क्षेत्रीय सहयोगियों के माध्यम से ईरान को सतर्क किया और इस्राइल से भी संयम बरतने का आग्रह किया। अमेरिका का मानना था कि बातचीत जारी रखना युद्ध को आगे बढ़ाने से बेहतर विकल्प है। रिपोर्ट के मुताबिक, युद्ध शुरू होने के बाद इस्राइल की प्राथमिकता ईरान के शीर्ष सैन्य और राजनीतिक नेतृत्व को निशाना बनाना थी। दावा किया गया है कि वर्षों में ईरान के कई वरिष्ठ अधिकारियों की मौत ऐसे हमलों में हुई। रिपोर्ट के अनुसार, इस्राइल चाहता था कि ईरान के मौजूदा सत्ता ढांचे को कमजोर किया जाए और नेतृत्व परिवर्तन का रास्ता बने। यही वजह थी कि बातचीत में शामिल अपेक्षाकृत व्यावहारिक नेताओं पर भी खतरा बना रहा। अमेरिका की सोच इससे अलग थी। वह सैन्य दबाव के साथ–साथ बातचीत के जरिए स्थायी समाधान निकालने की कोशिश कर रहा था। क्यों अहम थे अराघची और गालिबाफ? अब्बास अराघची और मोहम्मद बाघेर गालीबाफ ईरान की वार्ता टीम के सबसे महत्वपूर्ण चेहरों में शामिल थे। दोनों क्षेत्रीय देशों के साथ लगातार संपर्क में थे और युद्धविराम लागू कराने की कोशिशों का नेतृत्व कर रहे थे। रिपोर्ट के अनुसार, मार्च में भी इन दोनों के इस्राइल के निशाने पर होने की जानकारी सामने आई थी। बाद में अमेरिका के हस्तक्षेप के बाद कथित तौर पर इस्राइल ने तत्काल कार्रवाई नहीं की। यही कारण था कि इन दोनों नेताओं की सुरक्षा को लेकर ईरान ने भी अतिरिक्त सावधानी बरतनी शुरू कर दी। क्या ईरान ने सुरक्षा व्यवस्था और कड़ी कर दी थी?

रिपोर्ट के अनुसार, संभावित हमलों की आशंका के बाद ईरान ने अपने शीर्ष नेताओं की सुरक्षा और यात्रा व्यवस्था पूरी तरह बदल दी। जब अराघची और गालीबाफ पाकिस्तान में अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस से मुलाकात के लिए गए तो ईरान ने पाकिस्तान और कतर के माध्यम से अमेरिका से यह भरोसा मांगा कि इस्राइल प्रतिनिधिमंडल को निशाना नहीं बनाएगा। बताया गया कि ईरानी प्रतिनिधिमंडल के विमान को पाकिस्तान की सीमा से इस्लामाबाद तक लड़ाकू विमानों की सुरक्षा मिली। वापसी के दौरान सुरक्षा खतरे की सूचना मिलने पर विमान को ईरान के मशहद हवाई अड्डे पर आपात स्थिति में उतारा गया। इसके बाद प्रतिनिधिमंडल सड़क मार्ग से करीब आठ घंटे का सफर तय कर तेहरान पहुंचा। क्या इसके बाद भी बातचीत जारी रही? इन सुरक्षा खतरों के बावजूद दोनों नेता कूटनीतिक प्रयासों में सक्रिय रहे। रिपोर्ट के मुताबिक, मई में दोनों कतर गए और जून में स्विट्जरलैंड में अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल के साथ एक और बैठक में शामिल हुए। इसी दौरान अराघची ने ब्रिक्स विदेश मंत्रियों की बैठक में हिस्सा लेने के लिए भारत का भी दौरा किया। इससे संकेत मिला कि सुरक्षा खतरे के बावजूद ईरान बातचीत का रास्ता बंद नहीं करना चाहता था। वहीं अमेरिका भी युद्ध को लंबा खींचने के बजाय किसी अंतरिम समझौते तक पहुंचने की कोशिश करता रहा। क्या अमेरिका और इस्राइल के लक्ष्य अलग हो गए थे? रिपोर्ट के अनुसार, युद्ध के शुरुआती चरण में अमेरिका और इस्राइल एक साथ काम कर रहे थे, लेकिन बाद में दोनों की प्राथमिकताएं अलग दिखने लगीं। अमेरिका चाहता था कि संघर्ष को रोककर बातचीत आगे बढ़ाई जाए, जबकि इस्राइल ईरान की सैन्य क्षमता, मिसाइल कार्यक्रम और मौजूदा शासन पर अधिक दबाव बनाए रखना चाहता था। रिपोर्ट में दावा किया गया है कि इस्राइल को आशंका थी कि जल्द युद्धविराम होने से ईरान आर्थिक रूप से संभल जाएगा और भविष्य में अपनी सैन्य तथा परमाणु क्षमताओं को फिर मजबूत कर सकता है। यही वजह थी कि दोनों देशों की रणनीति में स्पष्ट अंतर दिखाई दिया। पूरी रिपोर्ट यह संकेत देती है कि युद्ध के दौरान केवल सैन्य कार्रवाई ही नहीं, बल्कि कूटनीतिक स्तर पर भी कई समानांतर प्रयास चल रहे थे। एक तरफ इस्राइल अपने सुरक्षा उद्देश्यों को पूरा करना चाहता था, जबकि दूसरी ओर अमेरिका क्षेत्र में स्थिरता बनाए रखने और युद्धविराम को सफल बनाने पर जोर दे रहा था। हालांकि इन दावों पर संबंधित देशों की ओर से आधिकारिक पुष्टि नहीं की गई है, लेकिन यदि रिपोर्ट सही साबित होती है तो यह पश्चिम एशिया में अमेरिका और इस्राइल की रणनीतिक सोच के अंतर को भी उजागर करती है।

हत्या वाली जगह पहुंचा अयातुल्ला अली खामेनेई का ताबूत, मोजतबा नहीं होंगे शामिल

तेहरान, एजेंसी। ईरान के पूर्व सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई के शव वाले ताबूत को उस स्थान पर ले जाया गया जहां उनकी हत्या की गई थी। यह जानकारी ईरानी सरकार मीडिया ने एक अघोषित कार्यक्रम में बताया। इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ ईरान ब्रॉडकास्टिंग (आईआरआईबी) के अनुसार, 'एक अघोषित घटना में, पूर्व सर्वोच्च नेता अयातुल्ला खामेनेई के पार्थिव शरीर वाले ताबूत को उनके शहादत स्थल पर लाया गया।' इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कोर (आईआरजीसी) के अनुसार ईरान की राजधानी में 4 और 5 जुलाई को होने वाले बहु–दिवसीय सार्वजनिक विदाई समारोह में रिकॉर्ड तोड़ भीड़ जुटने की आशंका है, जिसमें 20 मिलियन तक प्रतिभागी शामिल हो सकते हैं। इस बीच, ईरान सरकार ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने ईरानी विदेश मंत्री अब्बास अराघची से फोन पर बात कर संवेदना व्यक्त की। एक्स पोस्ट में सरकार ने कहा, श्संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने विदेश मंत्री अब्बास अराघची से फोन पर बात की, जिसमें उन्होंने ग्रैंड अयातुल्ला सैयद अली खामेनेई की शहादत पर शोक व्यक्त किया। इसके साथ ही क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय घटनाक्रम, होर्मुज जलडमरूमध्य, लेबनान युद्धविराम और चल रही वार्ता पर चर्चा की। विदेश मंत्रालय (डम।) ने गुरुवार को घोषणा की कि बिहार के राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) सैयद अता हसनैन और विदेश मामलों की राज्य मंत्री (डै) पबित्रा मार्गेरिटा 3 जुलाई (शुक्रवार) को ईरान के दिवंगत सर्वोच्च नेता अयातुल्ला सैयद अली खामेनेई के अंतिम यात्रा समारोह में शामिल होने के लिए ईरान की यात्रा करेंगे। मौजूदा सर्वोच्च नेता अंतिम यात्रा में क्यों शामिल नहीं होंगे?

इस बीच, भारत में वर्तमान नेता के प्रतिनिधि, आयतुल्लाह हकीम इलाही के अनुसार, सुरक्षा चिंताओं के कारण ईरान के सर्वोच्च नेता मोजतबा खामेनेई अपने पिता, पूर्व सर्वोच्च नेता अली खामेनेई के अंतिम संस्कार समारोह में शामिल नहीं होंगे। इलाही ने इस फैसले का कारण इस्राइली धमकियों और निगरानी के जोखिमों को बताया, जिससे सार्वजनिक उपस्थिति खतरनाक हो सकती थी। 27 जून को, ईरानी सरकारी मीडिया प्रेस टीवी ने बताया कि इस्लामिक गणराज्य के अधिकारियों ने दिवंगत नेता के दो दिवसीय सार्वजनिक विदाई और अंतिम संस्कार समारोहों के लिए विस्तृत व्यवस्थाओं की घोषणा की है। वहीं, अधिकारियों को देश के इतिहास में सबसे बड़े सार्वजनिक समारोहों में से एक होने की उम्मीद है। एक टेलीविजन साक्षात्कार में, ईरान के इस्लामिक रिवोल्यूशन गार्ड्स कोर (आईआरजीसी) के तेहरान कमांड के कमांडर, ब्रिगेडियर जनरल हसन हसनजादेह, जो अंतिम यात्रा की व्यवस्था की देखरेख करने वाले मुख्यालय के प्रमुख भी हैं। उन्होंने कहा कि समारोह 4 और 5 जुलाई को आयोजित किए जाएंगे। इसमें सार्वजनिक विदाई कार्यक्रम, अंतिम विदाई की प्रार्थना और एक अंतिम यात्रा जुलूस शामिल होगा। प्रेस टीवी के अनुसार, हसनजादेह के हवाले से, सार्वजनिक विदाई समारोह 4 जुलाई को सुबह 6 बजे (स्थानीय समय) तेहरान के इमाम खुमैनी ग्रैंड प्रेयर ग्राउंड्स में शुरू होगा, जो उस समय से शोक मनाने वालों के लिए खुला रहेगा। उन्होंने बताया कि निर्धारित उद्घाटन से पहले कार्यक्रम स्थल पर आम जनता का प्रवेश वर्जित रहेगा। वहीं, विदाई समारोह स्थानीय समयानुसार रात 8रू00 बजे तक चलेगा। अंतिम संस्कार की प्रार्थना 5 जुलाई की सुबह निर्धारित की गई है। बता दें कि इस साल की शुरुआत में 28 फरवरी को अमेरिकी इजरायली हमलों में अली खामेनेई की मौत हो गई थी, जिसके कारण पश्चिम एशिया क्षेत्र में व्यापक संघर्ष शुरू हो गया था। अली खामेनेई की मृत्यु के बाद उनके बेटे मोजतबा खामेनेई को इस्लामी गणराज्य का नया सर्वोच्च नेता नियुक्त किया गया।

टैरिफ की धमकी से ट्रंप ने कितने युद्ध रुकवाए ? भारत–पाकिस्तान जंग पर फिर दोहराया पुराना बयान

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप ने एक बार फिर दावा किया है कि उन्होंने भारत और पाकिस्तान के बीच संभावित युद्ध को टैरिफ की धमकी देकर रुकवाया था। ट्रंप ने कहा कि यदि दोनों देश लड़ाई जारी रखते तो वह उन पर 200 प्रतिशत टैरिफ लगा देते। हालांकि भारत पहले भी इस दावे को सिरे से खारिज कर चुका है और स्पष्ट कर चुका है कि दोनों देशों के बीच संघर्ष विराम किसी तीसरे देश की मध्यस्थता से नहीं, बल्कि दोनों देशों के सैन्य अधिकारियों के बीच बातचीत से हुआ था। ट्रंप ने अमेरिकी मीडिया चौनल सीएनबीसी को दिए इंटरव्यू में कहा कि उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान आठ युद्ध रुकवाए और इनमें से पांच केवल टैरिफ की चेतावनी देकर रोके गए। उन्होंने भारत और पाकिस्तान का उदाहरण देते हुए दावा किया कि दोनों परमाणु शक्ति संपन्न देश युद्ध की कगार पर थे, लेकिन आर्थिक दबाव की चेतावनी के बाद तनाव कम हो गया। ट्रंप का यह बयान ऐसे समय आया है, जब वह लगातार अपनी व्यापार नीति और टैरिफ को प्रभावी कूटनीतिक हथियार बता रहे हैं।

क्या बोले ट्रंप, कैसे किया भारत–पाकिस्तान का जिक्र?

ट्रंप ने इंटरव्यू में कहा, श्मैंने आठ युद्ध रोके। भारत और पाकिस्तान भी उनमें शामिल हैं। अगर आप लड़ाई जारी रखेंगे तो मैं आपके देश पर 200 प्रतिशत टैरिफ लगा दूंगा। मैंने यही बात भारत से भी कही और पाकिस्तान से भी।ष उन्होंने यह भी दावा किया कि दोनों देशों के बीच हालात बेहद गंभीर हो चुके थे और युद्ध किसी भी समय शुरू हो सकता था। ट्रंप ने कहा कि दोनों देश परमाणु शक्ति संपन्न हैं और टकराव की स्थिति बेहद खतरनाक हो सकती थी। ट्रंप ने अपने बयान में यह भी दावा किया कि पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने उनकी भूमिका की सराहना की थी। ट्रंप के मुताबिक, शहबाज शरीफ ने उनसे कहा था कि उन्होंने इस युद्ध को रोककर कम से कम तीन करोड़ लोगों की जान बचाई। इसके अलावा ट्रंप ने यह भी दावा किया कि भारत–पाकिस्तान संघर्ष के दौरान 11 विमान मार गिराए गए थे और दोनों देश व्यापक युद्ध की ओर बढ़ रहे थे। हालांकि उन्होंने अपने इन दावों के समर्थन में कोई आधिकारिक साक्ष्य पेश नहीं किया।

क्रूज पर फैला नोरोवायरस, चालक दल समेत 125 लोग बीमार, कितना खतरनाक है यह संक्रमण?

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के सैन फ्रांसिस्को से कनाडा और अलास्का की यात्रा पर निकले एक लग्जरी क्रूज जहाज में नोरोवायरस का बड़ा प्रकोप सामने आया है। इस संक्रमण की चपेट में 125 लोग आए हैं, जिनमें 102 यात्री और 23 चालक दल के सदस्य शामिल हैं। घटना के बाद स्वास्थ्य एजेंसियां सतर्क हो गई हैं। आखिर यह वायरस कैसे फैलता है, इसके लक्षण क्या हैं और इससे बचाव कैसे किया जा सकता है, जानिए इस एक्सप्लेनर में। सैन फ्रांसिस्को से रवाना होकर कनाडा और अलास्का की 20 दिन की यात्रा पर निकले रूबी प्रिंसेस क्रूज में नोरोवायरस संक्रमण फैलने से 125 लोग बीमार हो गए। अमेरिका के रोग नियंत्रण एवं रोकथाम केंद्र (सीडीसी) के अनुसार, संक्रमितों में 102 यात्री और 23 चालक दल के सदस्य शामिल हैं। घटना के बाद जहाज के सैन फ्रांसिस्को लौटते ही विशेष सफाई और संक्रमण नियंत्रण की प्रक्रिया शुरू कर दी गई। यह मामला इसलिए भी गंभीर माना जा रहा है क्योंकि नोरोवायरस बंद जगहों और भीड़भाड़ वाले वातावरण में बहुत तेजी से फैलता है।

नोरोवायरस क्या है और यह इतना तेजी से क्यों फैलता है?

नोरोवायरस पेट और आंत से जुड़ा अत्यधिक संक्रामक वायरस है। यह संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आने, दूषित भोजन या पानी पीने और संक्रमित सतहों को छूने से फैल सकता है। क्रूज जहाज, हॉस्टल, अस्पताल और वृद्धाश्रम जैसी जगहों पर इसके फैलने का खतरा अधिक रहता है क्योंकि वहां बड़ी संख्या में लोग सीमित जगह में रहते हैं। अधिकांश लोगों में यह संक्रमण कुछ दिनों में ठीक हो जाता है, लेकिन छोटे बच्चों, बुजुर्गों और पहले से गंभीर बीमारी से जूझ रहे लोगों के लिए यह खतरनाक साबित हो सकता है। इस मामले में कितने लोग प्रभावित हुए और कंपनी ने क्या कदम उठाए? सीडीसी के अनुसार, रूबी प्रिंसेस क्रूज पर कुल 3,032 यात्री और 1,144 चालक दल के सदस्य मौजूद थे। संक्रमण की जानकारी 28 जून को स्वास्थ्य अधिकारियों को दी गई। हालांकि सभी संक्रमित एक साथ बीमार नहीं हुए थे।

खामेनेई के जनाजे में शामिल नहीं होंगे मोजतबा, धमकियों के बीच क्यों बदली गई रणनीति?

तेहरान, एजेंसी। ईरान में पूर्व सर्वोच्च नेता अली खामेनेई के जनाजे की तैयारियां चल रही हैं। इस बीच एक बड़ा घटनाक्रम सामने आया। रिपोर्ट के अनुसार, मौजूदा सर्वोच्च नेता मोजतबा खामेनेई अपने पिता के जनाजे में सार्वजनिक रूप से शामिल नहीं होंगे।

प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
सम्पादक
उमेश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
संयुक्त सम्पादक
अनंत श्रीवास्तव
संयुक्त सम्पादक (तकनीकी)
केशव श्रीवास्तव
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

शहर समता
स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित
सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332
आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466
Email : shaharsamta@gmail.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।